ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

कार्तिक २०७९ नवम्बर २०२२

बाल दिवस

रंग बिरंगे छाते जैसा अपना बचपन।
रंग बिरंगा जैसे सच्चा सपना बचपन।।

₹ ३०

भारत देश, हमारा देश,
सारे जग से न्यारा देश।

कविता

पंख अगर उग आएँ

– डॉ. फहीम अहमद

अगर हमारे परियों जैसे,
पंख कभी उग आएँ।
चिड़ियों जैसे चहक उठें हम,
उड़ विद्यालय जाएँ।

बागों में हम घुस जाएँ तो,
तोड़ फलों को खाएँ।
माली काका दौड़ाएँ तो,
हम झटपट उड़ जाएँ।

इतने ऊँचे उड़ जाएँ हम,
चाँद–सितारे छू लें।
सैर करें हम देश–देश की,
और हवा में झूलें।

क्रिकेट खेलें तो उड़–उड़कर,
कैच पकड़ लें सारे।
रन आउट कर सके न कोई
मैच कभी ना हारें।

चीलों से हम दौड़ मिलाएँ,
उड़ कर ऊँचे–ऊँचे।
चींटी जैसे लोग दिखें,
हम जब भी देखें नीचे।

– सम्भल (उ. प्र.)

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

कार्तिक २०७९ ▪ वर्ष ४३
नवम्बर २०२२ ▪ अंक ०५

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
शशिकांत फडके

मानद संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	३० रुपये
वार्षिक	:	२०० रुपये
पन्द्रहवर्षीय	:	२००० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१५० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

बालदिवस का अवसर हो तो बचपन की बातें छिड़ना स्वाभाविक ही है। हर बच्चे की इच्छा रहती है कि उसे परिवार में खूब लाड़-दुलार मिले, घर में खाने-पीने की कोई कमी न हो, जो चीज उसे बहुत भाती हो वह भरपूर मिले, मित्र बहुत ही बढ़िया हो, आस-पास के लोग उसे बहुत चाहते हों और सारा गाँव/नगर उसकी प्रशंसा करें। वह हर किसी का इतना प्यारा हो कि सब उसे अपने घर बुलाना चाहें। वह ऐसी जगह रहता हो जहाँ सुन्दर पहाड़, नदी का मनोरम किनारा, खूब हरियाली हो और वह उन सबमें बिना रोक-टोक अपनी मित्र-मंडली के साथ घूमे, गाए-बजाए, नाचे। चाहते हैं न आप सब भी ऐसा बचपन।

अच्छा! बताओ जरा ऐसा कोई नाम याद आ रहा है क्या जिसे ये सब प्राप्त हो? सोचिए थोड़ा..... चलो मैं ही बता देता हूँ वह है बालकृष्ण, कन्हैया, कान्हा अनेक नाम हैं जिनके उनका बचपन ऐसा ही था न?

लेकिन आप यह भी सोचिए कि वे अपने नदी, पर्वत, गाँव और गाँव वालों का केवल आनंद नहीं लेते उस पर आने वाली हर विपत्ति का सामना भी बचपन से ही करते हैं। गोवर्द्धन पर्वत की पूजा आरंभ करवाई, गाँव वालों को इन्द्र पूजा की रूढ़ी से बाहर निकाला, माखन-दूध कंस के अत्याचारी राज्य में जाना रोककर स्वदेशी भाव को दृढ़ किया, यमुना नदी को कालिया नाग के प्रदूषणकारी प्रभाव से मुक्त किया और पूतना से लेकर अनेक विचित्र और भयंकर राक्षसों से अपनी व गाँव वालों की रक्षा की। अर्थात् जिनसे हमें कुछ श्रेष्ठ मिलता है, आनंद मिलता है, पोषण व स्नेह मिलता है, उन सबकी रक्षा का उपाय और चुनौतियों का साहसपूर्वक सामना करना भी ऊपर लिखे आकर्षक बचपन का ही आवश्यक भाग है।

आप भी अपने समय की चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना करने का अभ्यास बचपन से ही कीजिए। जिन्हें जीवन में सही अर्थों में बड़ा बनना है वे बचपन से ही 'हम तो अभी छोटे हैं' ऐसा कभी नहीं सोचते और हाँ यह बात जितनी भैयाओं के लिए आवश्यक है, उतनी ही बहिनों के लिए भी अनिवार्य है। आपके बचपन में बालकृष्ण का आदर्श रच-बस जाए बाल दिवस पर यही शुभकामना है आपके लिए।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

।। अनुक्रमणिका ।।

कहानी

- माटी के लड्डू -सुधा दुबे ०५
- असफलता -राजीव सक्सेना ०८
- सब्जियों की बैठक -नरेन्द्र देवांगन १२
- काफल -पवन चौहान ३०
- नटखट किट्टू -सुधारानी तैलंग ३५
- कछुए को मिल गया काम -वैभव कोठारी ४१
- मेघना ने बुलाई एम्बुलेंस -सनतकुमार ४५

छोटी कहानी

- युद्ध तेरा बुरा हो -डॉ. कुँवर 'प्रेमिल' २३

चित्रकथा

- दूर की सूझ -संकेत गोस्वामी २०
- ये कैसी प्रैक्टिस -देवांशु वत्स ४८
- लाखों का नुकसान -देवांशु वत्स ४८
- सलाह का अवसर -देवांशु वत्स ४९

कविता

- पंख अगर उग जाएँ -डॉ. फहीम अहमद ०२
- भारत का संविधान -संतोष कुमार सिंह ०७
- तुलसी -गोविन्द भारद्वाज १५
- कलियाँ -अनीता गंगवार शर्मा १९
- होता है हर युद्ध भयावह -डॉ. गोपाल राजगोपाल २२
- अच्छे बच्चे -लक्ष्मीप्रसाद गुप्त 'किंकर' ३३
- बागीश की कविताएँ -बागीश दिनकर ३७
- तितली रानी -विज्ञान व्रत ५१

स्तंभ

- बालसाहित्य की धरोहर -डॉ.नागेश पाण्डेय 'संजय' १६
- आपकी पाती - २४
- विज्ञान व्यंग्य -संकेत गोस्वामी २५
- गोपाल का कमाल -तपेश भौमिक २६
- छः अंगुल मुस्कान - २७
- थोड़ी थोड़ी डॉक्टरी -डॉ. मनोहर भण्डारी २८
- अशोक चक्र : साहस का सम्मान - २९
- सच्चे बालवीर -रजनीकांत शुक्ल ३८
- शिशु गीत -उमाकांत मालवीय ४०
- पुस्तक परिचय - ४४

बौद्धिक क्रीडा

- बढ़ता क्रम -देवांशु वत्स ०६
- खेलो खेल -संकेत गोस्वामी ३४

प्रसंग

- दूध की रोटी - १४

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।

विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टैट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** चालू खाता **(Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - "**मन्दसौर संजीत मार्ग SSM**" आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

माटी के लड्डू

– सुधा दुबे

शाला की छुट्टियाँ हो गई थी और सिद्धार्थ घर में बहुत बोर हो रहा था वह कभी टीवी चलाता, कभी अपनी कहानी और कविता की किताब पलटकर देखने लगता फिर शतरंज और लूडो लेकर बैठ जाता पर अकेले उसका खेलने में मन नहीं लग रहा था। वह सामान को वहीं पर पटककर माँ के पास रसोईघर में गया और उसने देखा माँ रसोई में लड्डू बना रही थी।

सिद्धार्थ–''माँ! आप काहे के लड्डू बना रही हो?'' ''बेटा! मैं बेसन के लड्डू बना रही हूँ, हमें रविवार को दादी के पास गाँव जाना है।''

''माँ! मैं भी आपके साथ लड्डू बनाता हूँ।''

''अरे... नहीं... बेटा! तुम मत सब खराब करो मैं बना लूँगी।'' ''पर मैं क्या करूँ मैं बहुत बोर हो रहा हूँ।'' सिद्धार्थ पैर पटकता हुआ बोला।

''अच्छा तो ऐसा करो मैंने तुम्हें छत पर बीज सुखाने के लिए दिए थे वह उठा लाओ और बगीचे में जो मिट्टी पड़ी है उससे मैं तुम्हें मिट्टी के लड्डू बीज डालकर बनाना सीखता हूँ।'' ''अरे वाह! क्या बात है माँ मिट्टी के लड्डू?'' ''हाँ बेटा! और उन्हें फिर दादी के यहाँ गाँव में खेतों में लगा देना।''

सिद्धार्थ ने माँ के सिखाने पर अपनी छोटी बहन शिबी के साथ मिलकर बहुत सारे मिट्टी के लड्डू बीज डालकर बनाए उसमें उसने अमरूद, सीताफल, आँवला और जामुन की गुठली जो उसने सुखाकर रखी थी वह डालकर बहुत सारे लड्डू बना लिए। शिबी ''क्या भैया! आप इतने सारे मिट्टी के लड्डू क्यों बना रहे हो? इनका क्या करोगे आप?'' ''मैं यह सब दादी के पास गाँव ले जाऊँगा।'' ''अच्छा! दादी क्या अब मिट्टी के लड्डू

खायेंगी ?'' और जोर-जोर से हँसने लगी।

''हट पागल..! मैं यह सब गाँव चलकर बताऊँगा।'' रविवार के दिन सिद्धार्थ और उसके माँ-पिताजी और बहन शिबी गाँव जाने को तैयार हो गए। माँ ने कहा सब अपना-अपना सामान उठाकर चलो।

सिद्धार्थ ने याद से अपना सीड बॉल याने मिट्टी के लड्डू वाला बैग अपने कंधे पर टाँग लिया।

दादी के घर पहुँचकर उसने अपना भारी बैग एक कोने में रखा भारी वजन से उसके कंधे दुखने लगे थे। उसने कंधे को सहलाया और सभी बड़ों के पैर छुए।

दादी ने जैसे इतना बड़ा बैग देखा तो बोलीं- ''अरे... सिद्धु! इसमें क्या है?'' माँ हँसकर बोली- ''सिद्धु! इसमें आपके लिए लड्डू लेकर आया है।'' दादी- ''मैं देखूँ बेटा?''

सिद्धार्थ- ''दादी! अभी दिखाऊँगा। बड़े काम की चीज है इसमें दादी!'' दादी ने सबको नींबू की शिकंजी पिलाई फिर खाना खाकर सब बात करने लगे।

सिद्धार्थ- ''दादी मैं कल दादाजी के साथ खेत पर जाऊँगा।'' दादी- ''अरे! सारे खेत जुते पड़े हैं पेड़ भी नहीं है वहाँ गर्मी में तुम वहाँ क्या करोगे?''

सिद्धार्थ- ''दादी मैं बताता हूँ।'' उसने बैग में से मिट्टी के लड्डू का पैकेट निकाला और बोला- ''दादी-दादा जी इसमें 'सीड बॉल' हैं। अमरूद, पपीता, सीताफल, जामुन के बीज इस मिट्टी में रखकर मैंने लड्डू बनाए हैं।'' दादी! ''अरे इन मिट्टी के लड्डू का क्या करोगे?'' सिद्धार्थ- ''मैं रामू काका और दादाजी के साथ खेत पर जाऊँगा खेत के किनारे-किनारे हम इन्हें बोयेंगे और इनसे थोड़े दिनों में पौधे तैयार होंगे। मैं रोज पानी भी डालूँगा।''

दादाजी- ''शाबाशऽऽऽऽ अंकुर की देख-रेख सिंचाई 'मेहनत से सेहत' वाह! बहुत अच्छे बेटा!''

सिद्धार्थ- ''फिर अगले वर्ष हमें पेड़ों की छाया भी मिलेगी और शुद्ध हवा भी और हाँ दादाजी कुछ मैं तो फल भी लगने लगेंगे। मुझे मास्टर जी ने बताया था कि जाम का पौधा एक वर्ष में फल देने लगता है।''

सिद्धार्थ के पिताजी अपने होशियार होनहार बच्चों को बड़े प्यार से देख रहे थे। इसे कहते हैं- ''आम के आम और गुठलियों के दाम'' सब जोर से हँसने लगते हैं।

- भोपाल (म. प्र.)

बढ़ता क्रम 13

देवांशु वत्स

1. जानकारी।
2. बोध, प्रतीति।
3. सूचना।
4. जिसका ज्ञान भ्रष्ट हो गया हो।
5. ज्ञानेन्द्रियों से जानने योग्य।
6. ज्ञानोदय का अर्थ है...।

1.	ज्ञा					
2.	ज्ञा					
3.	ज्ञा					
4.	ज्ञा					
5.	ज्ञा					
6.	ज्ञा					

उत्तर: 1. ज्ञा, 2. ज्ञान, 3. ज्ञापन, 4. ज्ञानहीन, 5. ज्ञान ग्राह्य, 6. ज्ञान की उत्पत्ति।

भारत का संविधान

– संतोष कुमार सिंह

संविधान सभा अध्यक्ष
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

प्रारूप समिति अध्यक्ष
डॉ. भीमराव आम्बेडकर

हम सब बच्चों को दादा ने, अपने पास बिठाया था।
संविधान है लिखित हमारा, हम सबको बतलाया था।।

संविधान सभा अध्यक्ष श्री,
राजेन्द्र प्रसाद बनाए।
प्रारूप समिति अध्यक्ष उसी में,
श्री भीमराव कहलाए।।

मूल रूप में संविधान प्रति,
चर्म–पत्र पर लिखी गई।
ड़ेढ़ फुट चौड़ी, दो फुट ऊँची,
तेरह के. जी. तोल हुई।।

प्रेमबिहारी रायजादा की,
हस्तलिखित इंग्लिश हिंदी।
लगे महीने छ: लिखने में,
छूटी नहीं कहीं बिंदी।।

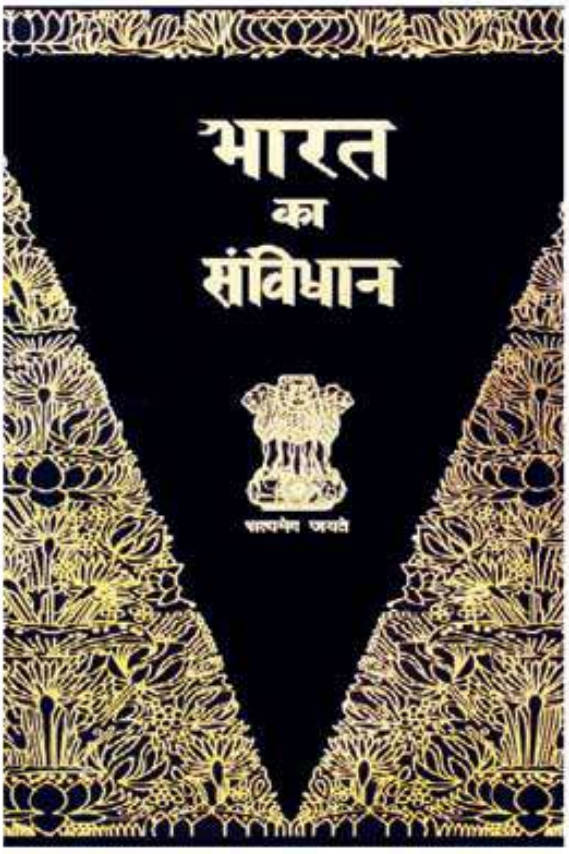

लिया न श्रम का मूल्य उन्होंने,
केवल शर्त एक रख दी।
पृष्ठ–पृष्ठ पर नाम हमारा,
और अंत सँग दादाजी।।

असली प्रति के पृष्ठ–पृष्ठ पर,
नंदलाल के चित्र सजे।
लक्ष्मण, सीता, राम, बोस के,
लक्ष्मीबाई, कृष्ण बने।।

गैस भरे बक्से के अन्दर,
असली प्रति है संरक्षित।
न्यायालय भी शब्द–शब्द को,
रहता है हरपल रक्षित।।

– मथुरा (उ. प्र.)

संविधान की मूल हस्तलिखित
प्रति के लेखक
श्री. प्रेमबिहारी नारायण रायजादा

संविधान की
मूल प्रति के चित्रकार
श्री. नंदलाल बसु

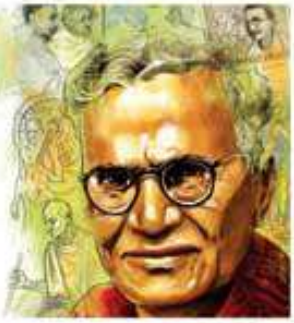

असफलता

– राजीव सक्सेना

''बच्चो! तुम्हें पता है... भारत अंतरिक्ष में अपने यात्री भेजने वाला है....।'' सुधीर आचार्य जी ने कक्षा में विज्ञान पढ़ाते हुए अपने छात्रों को जानकारी देते हुए कहा।

''आचार्य जी! हमने यह भी सुना है कि हमारे वैज्ञानिक शीघ्र ही चन्द्रमा पर अपना अभियान करने वाले हैं।'' रचित ने बीच में बोलते हुए कहा।

''हाँ! बिल्कुल ठीक यही नहीं इसरो (भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन) मंगल पर भी दूसरा यान भेजने में जुटा है। सही बात तो यह है कि दुनिया के सभी विकसित देशों के बीच अपने यान अंतरिक्ष में भेजने की प्रतिस्पर्धा लगी है। हमारा भारत भी पीछे नहीं है। लेकिन बच्चों समय रहते तुम्हें भी विज्ञान में रुचि लेनी होगी जिससे हमें योग्य वैज्ञानिक और इंजीनियर मिल सकें। नहीं तो हमारा देश पिछड़ जायेगा।'' सुधीर आचार्य जी ने कुछ गंभीर होकर कहा।

''आचार्य जी! मुझे तो विज्ञान पढ़ना बहुत पसंद है। मुझे यह बड़ा रोचक लगता है।'' सार्थक ने कहा।

''मुझे तो वैज्ञानिकों और उनके आविष्कारों की कहानियाँ पढ़ना पसन्द है।'' इस बार संकेत बोला।

''अंतरिक्ष यात्रा बड़ी मजेदार होती है। मैं तो बड़ा होकर अंतरिक्ष यात्री बनूँगा। एलियनों अर्थात अंतरिक्ष वासियों से भेंट करूँगा।'' तुषार बोला।

''मैं तो वैज्ञानिक बनूँगा, बड़ा होकर आविष्कार करूँगा।'' सजल ने कहा।

सुधीर आचार्यजी की कक्षा में पढ़ने वाले बच्चे विज्ञान के बारे में अपनी–अपनी राय दे रहे थे। सुधीर आचार्य जी बड़े ध्यान से उन्हें सुन रहे थे। सारी कक्षा में एक भी छात्र ऐसा नहीं था जिसकी विज्ञान जैसे नीरस और कुछ कठिन लगने वाले विषय को भी वे इतने रोचक ढंग से पढ़ाते थे कि सभी की रुचि इसमें बनी रहती थी और कोई भी छात्र उनकी कक्षा में अनुपस्थित नहीं रहना चाहता था।

''बच्चो! अंतरिक्ष के बारे में जानने की जिज्ञासा तुम्हारे अंदर बनी रहे और तकनीक से तुम्हें जोड़ने के लिए अगले महीने 'रॉकेट बनाओ' प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है। जिसमें शहर के

सभी विद्यालयों को आमंत्रित किया गया है। आप अपने बनाये रॉकेट का प्रदर्शन उसे उड़ाकर प्रतियोगिता में कर सकते हैं। बढ़िया रॉकेट बनाने वाले बच्चों को पुरस्कार दिया जायेगा.. हाँ, एक बात और रॉकेट बनाने के लिए आप इन्टरनेट या बड़ों की सहायता भी ले सकते हैं। इस प्रतियोगिता का जीवंत प्रसारण भी किया जायेगा।'' आचार्य जी ने कहा।

''वाह! मैं भी एक नन्हा रॉकेट बनाऊँगा।'' चंचल ने चहकते हुए कहा।

अनुभव को छोटे रॉकेट या उनके नन्हें मॉडल बनाने का बड़ा शौक था। शहर के ही एक पटाखे बनाने

वाले से उसने रॉकेट बनाने के गुर सीखे थे। इसके अलावा वह नेट पर भी रॉकेट बनाने के तरीके सीखता रहता था।

राकेट बनाना अनुभव की धुन थी। मित्र और सहपाठी भी अनुभव की इस धुन को अच्छी तरह जानते थे। तभी वे उसे 'रॉकेट मैन' कहकर पुकारते थे। संभव तो अक्सर कहता था– ''अनुभव! मुझे लगता है बड़ा होकर तू अवश्य ए. पी. जे. अब्दुल कलाम जैसा राकेट वैज्ञानिक बनेगा।''

उस दिन जब सुधीर आचार्यजी ने विद्यालय में आयोजित होने वाली 'रॉकेट बनाओ' प्रतियोगता के बारे में बताया तो मित्रों ने अनुभव से कहा– ''अनुभव! तुम्हारे लिये तो यह स्वर्णिम अवसर है। तुम अवश्य यह प्रतियोगिता जीतोगे।''

अनुभव भी मन ही मन प्रतियोगिता के लिए रॉकेट बनाने को तैयार हो गया।

किन्तु अब समस्या यह थी कि कैसा रॉकेट बनाया जाए। यह तो तय था कि दूसरे बच्चे भी नेट से सहायता लेकर रॉकेटों के एक से एक उत्तम प्रादर्श बनाकर उनका प्रदर्शन करेंगे।

''मुझे सबसे हटकर कुछ अनोखे प्रकार का मॉडल रॉकेट बनाना होगा जैसा किसी ने न बनाया हो।'' अनुभव विचार करने लगा।

लेकिन यह आसान काम नहीं था।

समय खिसकता जा रहा था। खिसक क्या रहा था बल्कि तेजी से पंख लगाकर उड़ रहा था।

अनुभव के भीतर रॉकेट प्रतियोगिता को लेकर गहरी उधेड़बुन चल रही थी। अनुभव को विज्ञान और तकनीक से जुड़ी खबरें देखने–पढ़ने का भी शौक था।

एक दिन–ज्यों ही अनुभव ने अपना टी.वी. खोला स्क्रीन पर एलन मस्क का चेहरा दिखायी दिया। टी. वी. पर एलन मस्क का साक्षात्कार दिखाया जा रहा था। मस्क ने साक्षात्कार लेने वाले

पत्रकार से कहा– ''हमारा कॉरपोरेशन ऐसे रॉकेट के प्रोटोटाइप पर काम कर रहा है जिसे अंतरिक्ष में उड़ान भरने के लिए ईंधन की आवश्यकता ही न हो यानि बिना ईंधन का रॉकेट।''

'बिना ईंधन का रॉकेट?' यह सचमुच एक नयी बात थी। अभी तक दुनिया में बिना ईंधन का रॉकेट बनाने में किसी को सफलता नहीं मिली थी।

''मैं प्रतियोगिता के लिए ऐसा ही रॉकेट बनाऊँगा। बिना ईंधन का रॉकेट।'' टी. वी. पर एलन मस्क का साक्षात्कार देखते ही जैसे अनुभव को राह मिल गयी। वह एक नये उत्साह से भर गया।

जो काम बड़े–बड़े वैज्ञानिक नहीं कर पाये थे वह एक किशोर या बच्चे के लिए आसान कैसे हो सकता था? मुझे अरुण चाचा की सहायता लेनी होगी। अनुभव ने मन ही मन विचार किया।

अरुण के चाचा इंजीनियर थे। जब अनुभव ने उनसे बिना ईंधन वाला रॉकेट बनाने का उल्लेख किया तो वे बोले– ''रॉकेट को उड़ान भरने के लिए ऊर्जा की आवश्यकता होगी। यह ऊर्जा कोई भी हो सकती है– विद्युत ऊर्जा, ध्वनि ऊर्जा या फिर प्रकाश ऊर्जा।''

''यदि मैं प्रकाश से चलने वाला रॉकेट बनाऊँ तो कैसा रहेगा। बस, इसके लिए मुझे कुछ फोटो–सेल की ही तो आवश्यकता होगी।''

अचानक एक जोरदार सूझ भरा विचार बिजली की तरह अनुभव के मन में कौंध गया।

बस, फिर क्या था।

अनुभव एकदम हवा–हवाई हो गया। वह फोटो सेल से उड़ने वाला यानी फोटान रॉकेट बनाने में जुट गया। अरुण चाचा ने भी रॉकेट के लिए फोटो सेल बनाने में उसकी खूब सहायता की।

आखिर प्रतियोगिता के लिए अनुभव का रॉकेट बनकर तैयार हो गया। कुछ–कुछ हवाई जहाज जैसा दिखने वाला अनुभव का यह रॉकेट बिल्कुल अलग या अनोखे किस्म का था।

प्रतियोगिता वाले दिन दूसरे बच्चे अनुभव का यह अजीबो–गरीब आकृति वाला रॉकेट देखकर हैरान थे।

प्रतियोगिता प्रारंभ हुई।

''नौ... आठ... सात... चार... दो... एक... शून्य।''

आचार्यजी ने 'काउन्ट डाउन' यानी उल्टी गिनती शुरू की तो शून्य पर पहुँचते ही दर्जनों रॉकेट दनदनाते हुए हवा में ऊँची उड़ान भरते हुए चले गये।

अनुभव का रॉकेट बस बीस–तीस मीटर ऊँचा ही उड़ पाया और फिर एकाएक औंधे मुँह मैदान में नीचे गिरकर मिट्टी में धँस गया।

हो... हो... हो... हो...।

अनुभव के रॉकेट की यह दशा देखकर आस–पास खड़े दर्शकों, अध्यापकों और सहपाठियों के मुँह से हँसी का एक फव्वारा ही छूट पड़ा।

वे व्यंग्य भरी दृष्टि से उसे देख रहे थे।

''कहो रॉकेट मैन! तुम्हारा रॉकेट तो फुस्स हो गया।'' संभव ने व्यंग्यपूर्वक कहा।

पता नहीं एकाएक क्या हुआ!

अनुभव की आँखों में आँसू उमड़ आये। उसका महीने भर का परिश्रम धूल में मिल गया।

वह जोर–जोर से सुबकने लगा और साथ आये अपने पिता जी से लिपटकर रोने लगा।

''रोओ मत अनुभव! तुम हारे नहीं हो। अगली बार फिर प्रयत्न करना।'' पिता जी ने दिलासा देते हुए कहा।

मॉडल रॉकेट बनाने के लिए पुरस्कार मिलना तो दूर किसी ने अनुभव को शाबाशी तक नहीं दी।

अनुभव ने मैदान में गिरा अपना रॉकेट उठाया और पिता जी के साथ चुपचाप घर चला आया।

किन्तु यह कहानी का अंत नहीं था।

एक दिन अनुभव के पिता जी को भारतीय

अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन यानी 'इसरो' की ओर से एक ई–मेल प्राप्त हुआ। संगठन के चेयरमैन ने अनुभव के बनाये रॉकेट को अपनी प्रयोगशाला में जाँच के लिए मँगाया था। इसरो के वैज्ञानिकों ने अनुभव के प्रोटोटाइप में रुचि दिखायी थी।

अनुभव और उसके पिताजी तो क्या स्वयं सुधीर आचार्य जी के आश्चर्य की कोई सीमा न रही। दरअसल इसरो के वैज्ञानिकों ने 'रॉकेट बनाओ' प्रतियोगिता का प्रसारण देखा था।

अनुभव ने अपना अधजला रॉकेट बेंगलुरू के अंतरिक्ष मुख्यालय भेज दिया।

कुछ ही दिनों बाद अनुभव को इसरो के चेयरमैन की ओर से फिर संदेश प्राप्त हुआ। इस बार उन्होंने अनुभव को उसके पिता जी के साथ अंतरिक्ष मुख्यालय में भेंट के लिए बुलाया था।

इसरो के चेयरमैन स्वयं देश के बड़े रॉकेट वैज्ञानिक थे।

जब अनुभव पिताजी के साथ मुख्यालय पहुँचा तो उन्होंने स्वागत करते हुए कहा– ''अनुभव! तुमने गजब का रॉकेट बनाया है, वैज्ञानिक जिसका लम्बे समय से सपना देख रहे हैं– फोटान रॉकेट। इसके लिए तुम्हें एक विशेष पुरस्कार दिया जा रहा है.. बिल्कुल अभी।'' क्षणभर के लिए तो अनुभव और उसके पिता जी को अपने कानों पर विश्वास ही नहीं हुआ।

अनुभव कुछ अचकचाकर बोला– ''लेकिन, मेरा रॉकेट तो असफल हो गया था। मैं प्रतियोगिता जीतने में असफल रहा।''

''कौन कहता है तुम असफल रहे? तुम्हारा रॉकेट भी असफल नहीं हुआ था। तीस मीटर ही सही लेकिन तुम्हारा यह रॉकेट जिसे मैं 'फोटान रॉकेट' कहूँगा लगभग तीस मीटर उड़ने में सफल रहा। हमने इसकी गहराई से जाँच की है। डाटा का विश्लेषण करने से पता चला है कि रॉकेट की प्रणाली शार्ट

सर्किट हो जाने के कारण इसके फोटो सेल जल गये और अपेक्षित थ्रस्ट न बन पाने के कारण रॉकेट अधिक ऊँची उड़ान नहीं भर पाया। लेकिन तुम्हारे इस रॉकेट ने हमारी राह आसान कर दी है। इसरो ने तुम्हारे मॉडल के आधार पर विशालकाय फोटान रॉकेट बनाने की दिशा में काम शुरू कर दिया है। वह दिन दूर नहीं जब बिना ईंधन वाले भारतीय रॉकेट गहन अंतरिक्ष में उड़ान भरेंगे।''

''ल... ल... लेकिन...।''

''लेकिन–वेकिन कुछ नहीं अनुभव। तुम्हारा रॉकेट असफल हुआ था, तुम नहीं। अब जरा देखो– महान वैज्ञानिक थॉमस अल्वा एडीसन ने हजार बार से अधिक बल्ब का फिलामेंट बनाया था तब कहीं वह बल्ब बन पाया जो आज हमें रोशनी देता है। माइकल फैराडे ने सैकड़ों बार प्रयत्न किया तब कहीं वे बिजली का पहला डायनमो बना पाये थे। ऐसे और भी उदाहरण हैं विज्ञान की दुनिया में। ध्यान रहे, कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती। हर असफलता के पीछे एक सफलता छिपी होती है। हमें असफलता से डरना नहीं चाहिए बल्कि उससे सबक लेना चाहिए।''

''आओ! मेरे साथ एक सेल्फी हो जाए।'' चेयरमैन ने अनुभव को पुरस्कार देते हुए कहा तो उसके पिताजी का छाती गर्व से चौड़ी हो गई और स्वयं अनुभव के चेहरे पर एक मुस्कान खेलने लगी।

– मुरादाबाद (उ. प्र.)

सब्जियों की बैठक

– नरेन्द्र देवांगन

सब्जी मंडी में आज सब्जियों के मुखिया आलू ने बैठक बुलवाई थी। आजकल के बच्चे सब्जियाँ खाना बिलकुल पसंद नहीं करते। ऐसी स्थिति में सब्जियों की बिक्री दिनों दिन घट जाएगी और सब्जियाँ पड़ी–पड़ी सड़ जाएंगी। सब्जियों की बैठक में इसी समस्या पर विचार–विमर्श करना था।

शाम को बंदगोभी, फूलगोभी, पालक, टमाटर, तोरी, बैंगन, टिंडा, मूली, मिर्ची, गांठगोभी आदि सभी सब्जियाँ सब्जी भवन में अपनी उपस्थिति दर्ज करा चुकी थीं। किसी के चेहरे पर रौनक नहीं थी। सभी गुमसुम और मुरझाई हुई अपनी–अपनी सीट पर चुपचाप बैठी थीं।

बैठक में उपस्थित सब्जियों को संबोधित करते हुए मुखिया आलू ने कहा– ''आज की बैठक का उद्देश्य आप सभी को मालूम है। हम सब्जियों की दुर्दशा हो रही है। कोई भी बच्चा हमको खाना तो दूर हाथ लगाना भी पसंद नहीं करता। यदि यही स्थिति रही तो हमें कोई खरीदेगा नहीं और हम सब सड़–गल जाएंगी।''

बैंगन बोला– ''सब्जी खाना तो दूर की बात है, मुझे तो देखते ही बच्चे कस कर अपनी आँखें बंद कर लेते हैं। आप सभी देख ही रहे हैं। मैं मोटा–ताजा कई दिनों से पड़ा–पड़ा सूखकर कांटा हो गया हूँ।''

''बैंगन भैया! आपकी बात से मैं बिलकुल सहमत हूँ। मेरी भी स्थिति एकदम खराब है। बच्चे मेरा नाम भी सुनना नहीं चाहते। मेरी सब्जी को देखकर अजीब सा मुँह बनाते हैं।'' टिंडा बोला।

पालक बोली– ''मैं तो गुणों से भरी हूँ उसके बाद भी बच्चे मुझे खाना पसंद नहीं करते। मैं तो विटामिन ए देती हूँ जो बच्चों की आँखों के लिए अच्छा होता है और खून की कभी पूरी करता है। पोषक तत्वों से भरपूर होने के बाद भी मैं बच्चों की उपेक्षा की शिकार हूँ।''

गाजर बोली– ''विटामिन ए वाली तो मैं भी हूँ। मेरी तरह ही मूली, चुकंदर, शलजम वगैरह सभी गुणों से भरपूर हैं। हम सब मिलकर सलाद के रूप में पोषक तत्वों का भंडार बच्चों के सामने प्रस्तुत करते हैं। फिर भी बच्चे हमारा उपकार नहीं मानते और हमारी अवहेलना कर देते हैं।''

सभी सब्जियाँ अपनी वर्तमान अवस्था से असंतुष्ट थीं। बारी–बारी से सभी अपना रोना रो रही थीं।

''हाँ! अगर हमारे अंदर उपस्थित विटामिन और प्रोटीन बच्चों के शरीर में नहीं पहुँचेंगे तो इसका लाभ वे नहीं उठा पाएंगे और बीमार पड़ जाएंगे। इससे हमारा देश भी अस्वस्थ हो जाएगा।'' पालक ने कहा।

बैंगन बोला– ''जब से जंक फूड आया है, बच्चे वही खाना पसंद करते हैं। सब्जी और फलों को वे भूलते जा रहे हैं।''

''आजकल के बच्चे टिफिन में रोटी–सब्जी नहीं ले जाते। उनके टिफिन में नूडल्स, चिप्स, ब्रेड टोस्ट या कोई और स्नैक्स होते हैं।'' मूली ने कहा।

सब्जियों के राजा आलू ने खड़े होकर कहा– ''हमें इस समस्या पर गंभीरता से विचार करना है। हम किस तरह से बच्चों को अपनी ओर आकर्षित कर सकते हैं। इस पर किसी के पास कोई सुझाव है तो बैठक में प्रस्तुत करो।''

मिर्ची बोली– ''आलू भैया! इस समस्या के लिए भला हम क्या कर सकते हैं? हम ठहरी सब्जियाँ जैसी की तैसी रहेंगी और हमारा स्वाद भी वैसा ही रहेगा।''

मुखिया आलू ने कुछ सोच–विचार कर कहा–

''नहीं मिर्ची बहन! हम बहुत कुछ कर सकते हैं। जो पुरानी रीतियों से सब्जियाँ बन रही हैं हमें उसे बदलना होगा। हम सब सब्जियाँ मिलकर कोई ऐसी रैसिपी तैयार करें जिसे बच्चे प्रसन्नता से अपनाएँ।''

''लेकिन, हम सब मिलकर किस तरह की व्यंजन विधि (रैसिपी) तैयार करेंगे?'' पालक ने आश्चर्य से पूछा।

आलू ने कहा– ''हम सभी मिलकर बहुत अच्छी व्यंजन विधि तैयार कर सकते हैं। सब्जियाँ तैयार करने के कई तरीके होते हैं। सब्जियाँ आपस में मिल कर सैकड़ों प्रकार से सब्जियाँ बना सकती हैं। आवश्यकता है तो केवल कौशल और बच्चों की पसंद को समझने की।''

टमाटर तुरंत खड़ा हुआ और बोला– ''आलू भैया! मेरे पास एक नई व्यंजन विधि है। आपकी आज्ञा हो तो बताऊँ।''

''हाँ, हाँ, क्यों नहीं। हर नई व्यंजन विधि का इस बैठक में स्वागत है।'' आलू ने झट से कहा।

टमाटर ने नई व्यंजन विधि के बारे में बताया– ''पहले हम सब्जियों को बारीक–बारीक काट लेंगे, फिर उनको पका लेंगे। जब वे पकने लगेंगी तो ऊपर से हल्के से घी में पनीर, आलू और मशरूम को तलकर डाल देंगे, क्योंकि पनीर और आलू ज्यादातर बच्चे शौक से खाते हैं और मशरूम को भी पसंद करते हैं। बच्चों को यह सब्जी अच्छी लगेगी।''

लौकी बोली– ''इस तरह तैयार सब्जी को धनिया, गाजर और चुकंदर के महीन टुकड़ों से सजा कर उसके ऊपर नीबू डाल दिया जाए तो स्वाद दुगुना हो जाएगा।''

''फिर इसे बच्चे अपनी पसंद के अनुसार पूरी, भटूरा, कुलचा, परांठा, रोटी या चावल के साथ खा सकते हैं।'' टिंडे ने अपनी राय दी।

मुखिया आलू ने कहा– ''एक ही तरह से बनाई गई सब्जी से बच्चे उब जाते हैं। किसी भी सब्जी को अलग–अलग तरीके से बनाया जाए तो उसमें नयापन तो होता ही है साथ ही स्वाद में भी भिन्नता होती है। यदि बच्चों को अलग–अलग स्वाद वाली सब्जियाँ मिलेंगी तो उन्हें पसंद आएगा और वे हमें देखकर नाक–भौं नहीं सिकोड़ेंगे।''

बैठक में उपस्थित सभी सब्जियों को मुखिया आलू के विचार अच्छे लगे और टमाटर की व्यंजन विधि की भी उन्होंने सराहना की। सब्जियों ने संकल्प लिया कि वे सभी नई व्यंजन विधि के लिए प्रयास करेंगे। अगले दिन से बच्चों को फिर से सब्जियाँ अच्छी लगने लगीं। अब सब्जियाँ हाथों–हाथ बिकने लगीं। सब्जी मंडी में पड़े–पड़े सड़ जाने का उनका डर जाता रहा।

– खरोरा, रायपुर (छ. ग.)

प्रसंग : नानक जयंती

दूध की रोटी

एक दिन गुरु नानकदेव जी घूमते-घूमते एमनाबाद जा पहुँचे। लालो की कुटिया के सामने। लालो अपने ध्यान में मगन अपने काम में खोया हुआ। काम था लकड़ी से हल, पहिये, खटिया बनाना, वह बढ़ई था। नानक जी ठहरे पहुँचे हुए आध्यात्मिक पुरुष, निर्मल मन। लालो ने उन्हें देखा तो हाथ जोड़े, नेत्रों से प्रेम के आँसू बहाता खड़ा हो गया। मुँह से बोल न फूट रहे थे। श्रद्धा से गला अवरुद्ध हो गया था।

गुरुमहाराज सच्ची श्रद्धा के अनूठे पारखी, वहीं आसन जमाया और सत्संग-भजन आरंभ कर दिए। ऐसा अद्‌भुत आनंद, ऐसा रस जो आत्मा को तृप्त कर दे भाग्यवानों को ही मिल सकता है। आज गुरु जी की कृपा से सब धन्य हो रहे थे। सत्संग के बाद भोजन प्रसादी भी थी। गाँव के धनपति मलिक भागो को भी यह सूचना मिली। वह चौंका- ''क्या क्षत्रिय जाति के होकर भी नानक उस छोटी जाति के लालो बढ़ई के यहाँ खाएँगे? वह भी मेरे जैसे धनवन्त के होते?''

मलिक भागो बड़े-बड़े भण्डारे करने वाला, अनेक ब्राह्मणों को मेवा-मिष्ठान्न पकवान खिलाने वाला, और नानकदेव जी एक बढ़ई के यहाँ भोजन करें, यह उसे अपमानजनक लगा।

नानक जी के आगे एक ओर पकवानों से भरी थाली रखी थी दूसरी ओर सरल हृदय लालो बढ़ई की सूखी रोटी-साग। नानक जी ने घमण्डी धनवान का घमण्ड तोड़कर उसका हृदय परिवर्तन करने की सोची।

एक हाथ में लालो की रोटी दूसरे में मलिक भागो की। मुट्ठी में दबाया तो लालो की रोटी से दूध और मलिक की रोटी से खून टपकने लगा। नानक जी का संदेश था लालो की रोटी परिश्रम ईमानदारी व सच्चे सरल हृदय मानव की रोटी है। इसमें प्रेम का दूध भरा है। मलिक की रोटी गरीबों का खून चूसकर दंभ व अहंकार भरे मानव की रोटी है। खून उसी का प्रतीक है। इस प्रकार जाति भेद से ऊपर निच्छल प्रेम का महत्व बताकर गुरु जी ने घमण्डी को झुका दिया।

तुलसी

– गोविन्द भारद्वाज

मेरे घर के आँगन की
तुलसी है हितकारी।
है लाल चुनरियाँ ओढ़े
लगती प्यारी-प्यारी।

सुबह-सवेरे नहा-धो
दादी नीर चढ़ाती।
अम्मा भी विधि-विधान से
दीपक नित्य जलाती।

सांझ ढले पूजन करते
गाते सभी आरती।
फूली नहीं समाती फिर
अपनी माता भारती।

औषधि का एक खजाना
रखती तुलसी भीतर।
कई रोग की एक दवा
है सचमुच जादूगर।

माँ सबकी कहलाती है
घर को रखती पावन।
हरी-हरी हो जाती यह
जब-जब आता सावन।

सदियों से है देवी ये
करते ग्रंथ बखान।
पढ़ के देखो चाहे तुम
अपने वेद-पुराण।

जड़ हो या फूल पत्तियाँ
सब की सब गुणकारी।
मेरे घर के आँगन की
तुलसी है हितकारी।

– अजमेर (राजस्थान)

हिंदी एकांकी के जनक : डॉ. रामकुमार वर्मा

प्रस्तोता – डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'

डॉ. रामकुमार वर्मा (१५ सितम्बर, १९०५ – ५ अक्टूबर, १९९०) को हिंदी एकांकी का जनक कहा जाता है। उन्होंने ही हिंदी में सबसे पहले 'बादल की मृत्यु' नामक एकांकी लिखा था। उनका जन्म मध्य प्रदेश के सागर जिले में श्रीमती राजरानी देवी और लक्ष्मीप्रसाद वर्मा जी के सुपुत्र के रूप में हुआ। वे बचपन से ही अत्यंत मेधावी थे। हर कक्षा में प्रथम आते। एम. ए. हिंदी की परीक्षा में तो उन्होंने प्रयाग विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया था। उन्हें सागर विश्वविद्यालय से 'हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास' विषय पर पीएच. डी. उपाधि प्रदान की गई।

उनका बाल्यावस्था का नाम कुमार था। बाल्यावस्था में ही उन्होंने कविताएँ लिखनी शुरू कर दी थीं। १७ वर्ष की अवस्था में एक कविता प्रतियोगिता में उन्हें ५१ रुपए का पुरस्कार मिला था। बड़ों के लिए तो कविता, नाटक, एकांकी, आलोचना आदि विधाओं में उनका अपार लेखन है ही, बच्चों के लिए भी उन्होंने रोचक साहित्य की रचना की है। उनका एक शिशुगीत देखिए–

है कैछा अलियल घोला,
घर के बाहल मुझको लाकर,
तलने छे मुख मोला।

ऐसे ही किशोरों को उनका–

हे ग्राम देवता नमस्कार।
सोने चांदी से नहीं किन्तु,
तुमने मिट्टी से किया प्यार।

गीत बहुत पसंद आता है। बचपन से ही उन्हें अभिनय में भी रुचि थी। बालसाहित्य के क्षेत्र में भी आपका महत्वपूर्ण अवदान है। 'दीपदान' और 'तैमूर की हार' जैसे उनके एकांकी तो विशेष रूप से बाल किशोरों के लिए ही लिखे गए। उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान उनके नाम से डॉ. रामकुमार वर्मा बाल सम्मान प्रदान करता है। जीविका के लिए उन्होंने अध्यापन का क्षेत्र चुना। देश–विदेश में अपनी सेवाएँ दीं। वे प्रयाण विश्वविद्यालय, मास्को विश्वविद्यालय, त्रिभुवन विश्वविद्यालय, नेपाल तथा श्रीलंका के पैरेवेनिया विश्वविद्यालय में सेवारत रहे।

हिंदी भाषा और साहित्य की अनन्य सेवा के लिए उन्हें अनेक पुरस्कार–सम्मान मिले।

आइए, यहाँ हम उनका एक दुर्लभ बाल एकांकी पढ़ते हैं। आप इसका अभिनय भी करना, बहुत आनंद आएगा।

बाल एकांकी

दूध हरा क्यों नहीं?

पात्र परिचय

सहदेव– भोला बालक, आयु दस वर्ष।

लक्ष्मी– सहदेव की माँ, आयु ३५ वर्ष।

बिरजू– दूध वाला, आयु ३० वर्ष।

समय– प्रात: ८ बजे

स्थान– एक सामान्य घर का कमरा।

(कमरे में तख्त पर दरी बिछी है। उस पर सहदेव सामने शीशा रखकर अपने सिर को कंघी से नाप रहा है। चौड़ाई से नापकर कंघी पर अँगुली रखकर उसे गहरी दृष्टि से देखता है। फिर लंबाई से नापता है। निराशा से मुँह बनाता है। भीतर से माँ की आवाज आती है।)

आवाज– बेटा सहदेव! (सहदेव अपनी कंघी उलट–उलटकर देखता है।)

फिर आवाज– सहदेव! ओ सहदेव (कंघी जमीन पर जोर से पटककर) क्या है माँ?

फिर आवाज– इधर आ! नाश्ता कर ले।

सहदेव– मैं बहुत जरूरी काम कर रहा हूँ।

(माँ का प्रवेश)

माँ– ऐसा कौन–सा जरूरी काम है जो यहाँ कर रहा है? मैं कब से पुकार रही हूँ।

सहदेव– मैं बहुत चिंता में हूँ माँ!

माँ– चिंता? कैसी चिंता?

सहदेव– चिंता की बात तो है ही, कल शाला में कुछ देर से पहुँचने पर मास्टर साहब ने मेरे सिर पर एक करारी चपत लगा दी थी।

माँ– तो देर से पहुँचने पर दण्ड तो मिलेगा ही। पर तुझे देर कैसे हो गयी? तू तो हमेशा से पहले पहुँचता है।

सहदेव– रास्ते में एक अंधे बाबा को रास्ता बतलाने में कुछ देर लग गयी।

माँ– अंधे को रास्ता बतलाना तो अच्छी बात है। तुमने मास्टर साहब से यह नहीं कहा?

सहदेव– वे गुस्से में थे। उन्होंने सुना ही नहीं। और सिर पर लगा दी एक चपत।

माँ– तो क्या बुरा हुआ?

सहदेव– मास्टर साहब ने एक दिन बतलाया था, वस्तुएँ पीटने से बढ़ जाती हैं। सोने को जितना ही पीटो, वह उतना ही बड़ा हो जाता है। उन्होंने कई बार मेरे सिर को पीटा, लेकिन सिर उतना ही बड़ा है जितना परसों था। मैंने कई बार सिर को कंघे से नापा, लेकिन वह बड़ा नहीं हुआ।

माँ– वाह! सहदेव तू कितना भोला है। अरे! सोने जैसी धातु को पीटने से वह बढ़ सकती है, जीवित वस्तुएँ पीटने से नहीं बढ़ती।

देव– (दुहराकर) जीवित वस्तुएँ... पीटने से नहीं बढ़ती। लेकिन तुम तो उस दिन पड़ोसिन से कह रही थीं कि मेरा सोने जैसा बेटा है।

माँ– अरे! वह तो मैं प्रेम से कह रही थी। सोना बहुत मूल्यवान है, उसी तरह तू भी मेरे लिए बहुत मूल्यवान है। फिर यह तो कहने का मुहावरा है– सोने जैसे देश, सोने जैसी बात, सोने जैसा दिन।

सहदेव– मूल्यवान वस्तु सोने जैसी होती है, यह समझ गया। तुम बहुत अच्छी तरह समझाती हो माँ! दूसरे लोग अच्छी तरह नहीं समझाते। मास्टर जी भी नहीं। वे तो नाराज होकर मार बैठते हैं। माँ, तुम भी हमारे विद्यालय की गुरु जी बन जाओ न!

माँ– मैं बिना शाला के ही तेरी गुरु हूँ। माँ अपने बच्चे की पहेली गुरु होती है। माँ जिस तरह अपने बच्चे को सिखलाती है, बच्चा आगे चलकर वैसा ही बन जाता है। वीर शिवाजी की पहली गुरु उनकी माता जीजाबाई ही थी। लालबहादुर शास्त्री की भी पहली गुरु उनकी माता जी ही थीं।

सहदेव– माँ! तुम्हारी बातें ठीक से समझ में आ गयीं। अब मैं भी वीर शिवाजी और लालबहादुर शास्त्री जी की भाँति वीर बनूँगा।

माँ– ऐसा ही हो, मेरे लाल!

(बाहर से आवाज आती है)

आवाज– माताजी! दूध ले लीजिए।

माता– क्या है बिरजू? (बिरजू का प्रवेश)

बिरजू– माताजी! दूध ले लीजिए। आज काली गाय का दूध लाया हूँ।

सहदेव–काली गाय का?

बिरजू– काली गाय का दूध बहुत ताकत देता है भैया! इसे पियोगे तो राजा बेटा बन जाओगे।

माँ– यह तो राजा बेटा है ही। (बिरजू से) बिरजू, बरामदे में जो बर्तन रखा है।

उसी में एक लीटर दूध रख दो।

बिरजू– बहुत अच्छा माता जी! (दूध रखने चला जाता है।)

सहदेव– माँ! एक बात मेरी समझ में नहीं आती?

माँ– कौन सी?

सहदेव– माँ! गाय हरी घास खाती है, तो उसका दूध हरा क्यों नहीं होता– वह सफेद क्यों हो जाता है।

सहदेव– न जाने कब बड़ा होऊँगा और डॉक्टर बनूँगा।

माँ– बस, खूब दूध पीता जा। जल्दी बड़ा हो जाएगा।

सहदेव– अच्छा माँ! शाला के लिए देर हो रही है।

माँ– मैं जल्दी से दूध गरम कर देती हूँ। तू पी ले और शाला चला जा।

सहदेव– अच्छा माँ! आज से खूब दूध पियूँगा। और बड़ा बनूँगा। तब तक मैं शाला का पाठ देख लूँ। (सहदेव उठता है– पदरा धीरे–धीरे गिरता है।)

– शाहजहाँपुर (उ. प्र.)

कालियाँ

– अनीता गंगाधर शर्मा

हरी–भरी बगिया के अंदर,
रहती पाँच सहेली।
गुड़हल गेंदा लिली मोगरा,
केली नई–नवेली।।

बातें दिन–भर पाँचों करती,
करती हर पल मस्ती।
उनके फूलों की खुशबू से,
महके सारी बस्ती।।

रोज शाम बगिया को अपनी,
देता मग्गू पानी।
बूँद–बूँद से करो सिंचाई,
कहती थी यह नानी।।

केली मग्गू से कहती है,
तुम हो प्यारे बच्चे।
खूब ध्यान हम सबका रखते,
मन के बिल्कुल सच्चे।।

लिली–मोगरा भी झूठ बोले,
लो यह सारी कलियाँ।
इन कलियों से भर जाएगी,
दादी जी की डलिया।।

फूलों की जब बनती माला,
खुश हो वो इठलाते।
मंद–मंद मुस्का के सारे,
प्रभु को शीश नवाते।।

– अजमेर (राजस्थान)

दूर की सूझ

एक अमीर व्यापारी बेचने की चीजें लेकर एक कस्बे से दूसरे कस्बे जाया करता था. एक बार उसने अपने तीन नौकरों राजू, राधू और हरिया को साथ लिया-

राजगढ़ कस्बे के लिए बहुत लम्बे रास्ते को पैदल तय करना है तीन दिन भी लग सकते हैं.. चलो एक एक थैला उठा लो..

चित्रकथा- संकेत गोस्वामी

राधू ने सबसे भारी थैला चुना-

यह छोटा है मैं यह लूंगा.

तुम मूर्ख हो राधू दोपहर तक बोझ से परेशान हो जाओगे..

दोपहर में खाने का वक्त हुआ तब-

राधू तुम्हारा थैला खोलो और खाने को दो..

खाने के बाद राधू का थैला कुछ हल्का हो गया-
यात्रा में हर बार जब वे लोग खाने को रुके, राधू का थैला छोटा और कम भारी होता गया-
और फिर..
अरे देखो, उसके पास उठा ले जाने को कुछ नहीं..
वह खाली हाथ चल रहा है मैं मालिक से कहता हूं
व्यापारी ने कहा-
शिकायत बंद करो, राधू ने दिमाग लड़ाया और यात्रा की शुरुआत में ही भोजनवाला भारी थैला चुना..
खाने की चीजें कम होती चली जाएंगी, यह तुम दोनों ने नहीं सोचा. अब इससे चिढना बंद करो और चलो.
समाप्त

होता है हर युद्ध भयावह

– डॉ. गोपाल राजगोपाल

होता है हर युद्ध भयावह।
अपने मन को रखो दयामय।।
गोला एक कहीं गिरता है
मानवता को वो हरता है।
कवलित होते बच्चे–बूढ़े
नहीं महज सैनिक मरता है।
बात करो कुछ हल निकलेगा
कुछ तो बनकर रहो सदाशय।।
याद करो उन दो शहरों को
झेल अभी तक रहे त्रासदी।
सद्भावी–सहयोगी बन लो
फलता है उन्माद क्या कभी।
किसी विकृति को मत पालो
तन से मन से रहो निरामय।।
ईश्वर की सत्ता को देखो
नहीं लगाना हाथ कभी।
नहीं सभ्यता कर पायेगी
भूले से फिर माफ कभी।
जीओ औरों को जीने दो
सारे जग को करो सखामय।।
बसा नहीं सकते शहरों को
क्यों करना विध्वंस उन्हें।
जनक नहीं जब तुम जीवन के
हाथ रहें क्यों रक्त–सने।
जीवन सभी सफल होता
जब रहे आचरण ममतामय।।
होता है हर युद्ध भयावह
अपने मन को रखो दयामय।।

– उदयपुर (राजस्थान)

युद्ध तेरा बुरा हो

– डॉ. कुँवर प्रेमिल

दोनों ओर ऊँची–ऊँची पहाड़ियाँ थीं। बीच में था एक बड़ा–सा मैदानी भू–भाग जिसमें तरह–तरह की वन संपदा फल–फूल रही थी। वहाँ तेल, गैस, कोयला आदि प्रचुर मात्रा में थे। नदियों में पानी था। वैज्ञानिक तरह–तरह के अनुसंधान कर रहे थे। पहाड़ियों पर रहने वाले अपनी–अपनी आवश्यकता के लिए पूरी तरह मैदानी भू–भाग पर आश्रित थे। फलत: उनमें विद्वेष की भावना पनपने लगी।

''यह सब हमारा है।'' उत्तरी पहाड़ी वाले जानवरों ने घोषणा कर दी।

''नहीं! यह सब हमारा था हमारा है और हमारा ही रहेगा।'' दक्षिणी पहाड़ी वालों ने भी घोषणा कर दी।

बस, फिर क्या था, मैदानी विभाग दोनों की धींगा मस्ती का शिकार होने लगा। आए दिन उपद्रव होने लगे। लूटपाट होने लगी। छोटी–मोटी झड़पें भी होने लगीं।

बात बिगड़ती गई और दोनों ओर से हथियार निकल आए। सब कुछ गड़बड़ा गया। धुआँ–धुँध से आँखें खराब होने लगीं। वहीं तेज आवाजों से कान बहरे होने लगे। उन दोनों के बीच युद्ध छिड़ गया था।

मिसाइलें–तोपें–बँदूकें जैसे घातक हथियारों ने जानवरों का जीना कठिन कर दिया। सर्वनाश होने लगा। मैदानी भू–भाग के जानवर पलायन करने लगे। हजारों–हजार जानवर शरणार्थी होने के लिए मजबूर हो गए। परिवार बिछुड़ गए। कोई कहीं तो कोई कहीं पहुँच गया।

वे खाली हाथ थे। उनका सब कुछ तो वहीं छूट गया था।

एक दिन दोनों ओर के लड़ाके एक-दूसरे को हराने की होड़ में खाली हो गए। वहाँ के भी जानवर भूखे मरने की कगार पर आ गए।

इधर मैदान वाले जानवर जहाँ भी गए, दुत्कारे गए।

उन्हें रहने का ठिकाना नहीं मिल रहा था। वे जिधर भी जाते वहाँ से भगा दिए जाते।

बड़े-बूढ़े जानवर कह रहे थे- ''युद्ध तो युद्ध है, एक बार शुरू हो जाए तो उसकी समाप्ति का क्या ठिकाना। सब कुछ बर्बाद कर देता है युद्ध। विनाशकारी होता है युद्ध। युद्ध तेरा बुरा हो, तूने किसका भला किया है जो हमारा करेगा।''

''युद्ध बंद करो-बंद करो युद्ध।'' दोनों ओर के पहाड़ी वाले विरोध करने लगे। उनके पास खाने-पीने के लिए कुछ भी नहीं बचा था।

जैसे-तैसे युद्ध बंद तो हो गया पर उसका दुष्परिणाम कब तक भुगतना पड़ेगा, सोच-सोचकर विव्हल हो रहे थे। सहमे-सहमे जानवर अपने-अपने घर लौट रहे थे। युद्ध ने उनका सब कुछ छीन लिया था। अपने-अपने घर सुधारते समय वे बुरी तरह रो रहे थे।

उनके आँसू पोछने वाला भी वहाँ कोई नहीं था।

- जबलपुर (म. प्र.)

आप की पाती

- गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

अगस्त की बाल पत्रिका आयी।
'देवपुत्र' सजधज कर लायी।
आवरण पृष्ठ बहुत रंगीन।
भारत-माँ की छवि स्वाधीन।
रोहित, पूजा, गौरव आएँ।
मिलजुल इसको पढ़ें-पढ़ाएँ।
मोनी देखो! इसके अंदर।
सभी चित्र हैं कितने सुंदर।
'बड़े भैया' की 'अपनी बात'।
सीखों की देती सौगात।
मनमोहक हैं चित्रकथाएँ।
हर लेती हैं मन: व्यथाएँ।
रुचिकर ललित बाल कविताएँ।
हर्ष और रस की सरिताएँ।
एक से बढ़कर एक कहानी।
प्रेरक, सुखप्रद बड़ी सुहानी।
जानकारी से युक्त हैं लेख।
मन है चकित 'धरोहर' देख।
संकेत भैया का विज्ञान व्यंग।
चढ़ा रहा वैज्ञानिक रंग।
कोई कहता 'खेलो खेल'।
कर व्यायाम, बढ़ाएँ मेल।
बड़ी चटपटी 'आपकी पाती'।
नए-नए संदेश सुनाती।
अंजू तुम चिंतित हो नाहक।
पत्रिका के बन जाओ ग्राहक।
'देवपुत्र' आए प्रतिमास।
पढ़ कर छाएगा उल्लास।
संपादक जी का आभार।
हम सब बनेंगे रचनाकार।

- लखनऊ (उ. प्र.)

विज्ञान व्यंग

-संकेत गोस्वामी

बेटा बाप से बढ़कर

– तपेश भौमिक

प्रत्येक वर्ष की भाँति उस वर्ष भी कृष्णनगर राजबाड़ी के पास बैसाख के महीने में 'बारह–दोल' का मेला लगा हुआ था। यह मेला आज भी लगता है। इसकी प्राचीनता और प्रसिद्धि के कारण दूर–दूर से लोग मेले का आनंद लेने आते हैं।

गोपाल का बेटा अभी कोई पाँच वर्ष का ही होगा। मेले के अवसर पर उसने जिद्द की कि उसे मेले ले चलना होगा। मेले में काफी भीड़–भाड़ होने के कारण गोपाल अपने बेटे को मेला ले जाना नहीं चाहता था। आए दिन बच्चों के खो जाने के समाचार आते रहते थे। इसलिए वह सशंकित था।

एक दिन जब बेटे ने खूब जिद्द की तो गोपाल थक–हार कर उसे मेले ले चला। उसने राह चलते हुए यह बार–बार बता चुका था कि बेटा किसी भी सूरत पर उसकी अँगुली न छोड़े।

लेकिन इंसान होनी को कब टाल सकता है। मेले की भीड़ में कब बेटे ने गोपाल की अँगुली छोड़ दी या उससे छूट गई, इसका उसे कुछ भी पता न चला। बेटा पीछे छूट गया और गोपाल आगे बढ़ गया।

अब बेटे ने अपने पिता को शीघ्र ही पाने के लिए एक उपाय निकाला। उसने एक ऊँची जगह पर जाकर राज–दरबार के आदेशों की घोषणा करने वालों–सा दोनों हाथ मुँह पर गोलाई बनाकर रखे और लगा चिल्लाने 'गोपाल–गोपाल' कहकर।

''पिताजी–पिताजी'' न चिल्लाकर ''गोपाल–गोपाल'' कहकर ताकि आसानी से उसके

पिताजी सुनकर उनकी ओर दौड़े आए। जैसी सोच, वैसा काम! कुछ ही मिनटों में गोपाल उस जगह पर उपस्थित हो गया जहाँ से उसका बेटा चिल्ला रहा था। गोपाल ने पाया कि उसके नाम को लेकर चिल्लाने वाला और कोई नहीं, स्वयं उसका बेटा ही है। गोपाल को बेटे पर काफी गुस्सा आ गया कि उसे इतना शिष्टाचार नहीं कि पिता को उनके नाम से नहीं पुकारना चाहिए। बेटे के आस-पास कुछ लोग जमा हो गए यह जानने के लिए कि प्रकरण क्या है? जब लोगों को यह पता चला कि बेटा पिता को उनके नाम से पुकार रहा था तो ''हा-हा, ही-ही'' का दौर खूब चला।

गोपाल ने गुस्से से भरकर बेटे से कहा-''तुझे इतनी भी अक्ल नहीं कि मैं तेरा पिता हूँ। तू इतना भी भूल गया?''

बेटे ने तत्क्षण उत्तर दिया, ''मुझे अच्छी तरह पता है कि आप मेरे पिता हैं और मैं आपका बेटा हूँ। अब आप ही बताइए कि यदि मैं 'पिताजी-पिताजी' कहकर पुकारता तो मेले के सारे पिताजी मेरे पास चले आते। सारे लोगों को मैं अपना पिता मान लूँ? अत: मैंने आपको आसानी से ढूँढ़ निकालने के लिए 'गोपाल-गोपाल' कहकर चिल्लाता रहा और आप मेरे सामने उपस्थित हो गए।'' गोपाल ने केवल यह कहा- ''बेटा बाप से बढ़कर'' जो लोग हँस रहे थे वे अपना-सा मुँह लेकर चलते बने।

- गुड़ियाहाटी, कूचबिहार (पं. बंगाल)

छ: अँगुल मुस्कान

एक महिला ने मिस्त्री को घर की घंटी ठीक करने के लिए बुलाया।

४ दिन तक प्रतीक्षा के बाद महिला ने मिस्त्री को फोन किया।

मिस्त्री- मैं क्या करूँ, पिछले ४ दिन से रोज आपके घर की घंटी बजा रहा हूँ लेकिन कोई दरवाजा नहीं खोलता।

*****

कड़ाके की गर्मी में बबलू धूप में खड़ा था।

पप्पू- ओए, क्या कर रहा है?

बबलू- पसीना सुखा रहा हूँ।

*****

फल विक्रेता- (एक ग्राहक से) लीजिए, सेब लेना है तो ये काश्मीर के लाल-लाल सेब लीजिए।

ग्राहक- क्या ये सेब काश्मीर से लाये हो?

फल विक्रेता- हाँ हाँ!

ग्राहक- काश्मीर में जब ये सेब नहीं बिके तो यहाँ ले आये। ग्राहकों को मूर्ख समझते हो?

*****

एक व्यक्ति अपना तबला कबाड़ी को बेचने गया।

कबाड़ी- इस तबले के मैं केवल ७५ रुपये दे सकता हूँ।

व्यक्ति- रहने दो भाई, मेरा पड़ोसी मुझे तबला न बजाने के ही १०० रुपये दे रहा है।

*****

अतिथि- मैं जिस समय से आपके घर में आया हूँ तभी से आपके नौकर को गाना गाते हुए, सीटी बजाते हुए सुन रहा हूँ। आप उसे मना क्यों नहीं करते?

गृह स्वामी- रसोई में वह चुपके से कुछ खाये नहीं इसीलिए मैंने उसे कह रखा है कि हर घड़ी गाते रहो, गुनगुनाते रहो।

*****

बेटा- पिता जी! आपने मुझसे कहा था कि हमेशा भलाई करनी चाहिए। लेकिन आपने मुझे यह क्यों नहीं बताया कि भलाई करने पर पिटाई होती है।

पिता जी- क्यों क्या हुआ?

बेटा- आज एक लड़के ने शिक्षक की कुर्सी पर स्याही गिरा दी थी। शिक्षक ने जैसे ही कुर्सी पर बैठना चाहा मैंने उनकी कुर्सी खींच दी ताकि उनके कपड़े खराब न हो। इसका परिणाम यह हुआ कि मेरी खूब पिटाई हुई।

डूबे हुए को बचा लिया

– डॉ. मनोहर भण्डारी

एक दिन रामू और मोहन पास के गाँव देसपुरा गए। वहाँ उनका एक साथी मगन रहता था। वे सीधे मगन के तालाब के किनारे वाले खेत पर गए। मगन वहीं मिल गया।

लोग तालाब में नहा रहे थे। कुछ लोग कपड़े धो रहे थे। कुछ ही दूरी पर दूध वाले अपनी भैंसों और गायों को नहला रहे थे। वे तीनों खेत में घूमते हुए बातें करने लगे।

इतने में शोर हुआ तीनों दौड़कर वहाँ पहुँचे। एक बालक लाखन ने बताया कि उसका एक साथी फिसलकर पानी में गिर गया है। सोमू किनारे पर ही फिसला था। इसलिए उसे कुछ लोगों ने उसी समय निकाल लिया था।

सोमू बेहोश था। उसकी साँस धीरे-धीरे चल रही थी। उसके पेट और फेफड़ों में पानी भर गया था। रामू ने सपाट जमीन देखी। सोमू को उठाकर वहाँ पीठ के बल लेटा दिया।

फिर रामू उसके घुटनों के अगल-बगल में अपने घुटने टिकाकर ऊकड़ूँ बैठ गया। अपनी दोनों हथेलियों के गद्दे नाभि से थोड़ा ऊपर रख दिए। एक झटके के साथ गद्दों को जोर से ऊपर की ओर दबाया। ऐसा करने से सोमू के मुँह से खूब पानी निकला। थोड़ी देर तक ऐसा करने पर उसके पेट तथा फेफड़ों का सारा पानी निकल गया।

कुछ ही देर में सोमू को होश आ गया। रामू ने कह- ''अब सोमू को डॉ. जोशी को दिखाने किशनगढ़ ले जाना होगा।''

लोगों ने कहा- ''यदि फेफड़ों में थोड़ा-सा भी पानी रह जाए तो फेफड़ों का रोग हो सकता है। यह रोग जान लेवा भी हो सकता था।

सोमू के पिता और मोहन उसको लेकर किशनगढ़ के लिए चल पड़े। मगन और उसके गाँव के लोग बहुत खुश हुए। रामू और मोहन ने सोमू की जान तो बचा ली थी।

मगन के पिताजी ने पूछा- ''रामू बेटा! एक बात तो बताओ। यदि सोमू की साँस रुक जाती तो क्या वह नहीं बचता?''

रानू ने कहा- ''यदि साँस रुक जाए तो आदमी ३-४ मिनिट में मर जाता है। ऐसे समय में उसी समय उसकी जान बचाने का प्रयत्न करना चाहिये।''

मगन ने जानना चाहा- ''ऐसे समय क्या करना चाहिये?''

रामू ने कहा- ''ऐसे समय अपने मुँह से साँस देना चाहिए।''

मगन ने अचरज से पूछा- ''अपने मुँह से साँस कैसे देते हैं?''

रामू ने कहा- ''डूबे हुए आदमी को पानी से निकालने के बाद पीठ के बल लेटा दो। फिर जैसे सोमू का पानी निकाला वैसे ही उसके फेफड़ों का पानी निकाल दो।''

मगन ने पूछा- ''उसके बाद क्या करना चाहिये?''

रामू ने कहा- ''इसके सिर की तरफ बैठ जाओ। उसके सिर को पीछे की तरफ मोड़ दो।

उसका मुँह खोल दो। अँगुलियों से नाक बंद कर दो। अपना मुँह उसके मुँह पर रख दो। फिर पूरी ताकत से उसके भीतर फूँक मारो। इससे उसका सीना फूल जाएगा।''

मगन ने पूछा– ''फिर उसके बाद?''

रामू ने कहा– ''अपना मुँह थोड़ी सी देर के लिए हटा दो जिससे भीतर की हवा बाहर निकल जाए। ऐसा एक मिनिट में १५ से १७ बार करें। छोटे बालकों के मामले में एक मिनिट में २० से २५ बार दोहराना चाहिए। मगन के पिता ने पूछा– ''ऐसा कब तक करना चाहिये?''

रामू ने बताया– ''जब तक आदमी अपने आप साँस न लेने लगे। उसमें एक घंटे तक का समय भी लग सकता है। इस तरह मुँह से साँस देने को नकली साँस देना कहते हैं।''

– इन्दौर (म. प्र.)

श्री तेजसिंह श्रीलज्जाराम एवं श्री पुरुषोत्तम

घोड़ों के दौड़ने की गड़गड़ाहट और बंदूकों की दहला देने वाली धाँय–धाँय के साथ धूल के गुबार यह एक ऐसा भयंकर अनुभव होता था कि मानो साक्षात् मृत्यु ही दलबल सहित आ धमकी हो। यह भयानक अनुभव उस समय चंबल क्षेत्र के अनेक गाँवों का दुर्भाग्य बन चुका था।

म. प्र. के मुरैना जिले का ऐसा ही एक गाँव था चुरैहला। १२ सितम्बर १९६४ की वह दिनांक भय की छात्री पर साहस की अमिट कहानी लिख गई। घटना ऐसी थी कि बंदूकों से लैस एक दस्युदल ने गाँव की एक महिला के आभूषण लूट लिये। भयभीत महिला ने सहायता की पुकार मचाई तो डाकुओं की गोली ने उसे घायल करके शांत करा दिया। पास ही एक झोंपड़ी में तीन लोग सो रहे थे। नाम थे श्री लज्जाराम, श्री पुरुषोत्तम, श्री तेजसिंह। महिला की करुण पुकार एवं गोलियाँ चलने की धाँय–धाँय सुनकर वे सतर्क हुए, हथियार के नाम पर उनके पास उस समय केवल लाठियाँ थीं। लेकिन साहस ही संघर्ष में सबसे बड़ा शस्त्र होता है। अतुल्य साहस दिखाते हुए वे बन्दूक–धारी क्रूर डाकुओं से भिड़ गए। तेजसिंह ने तो एक डाकू से बंदूक छीनने में भी सफलता प्राप्त कर ली। डाकूदल इसकी कल्पना भी न कर रहा था, वह बौखला गया। ताबड़तोड़ गोलियाँ दागी जाने लगीं ये बाँकी तिकड़ी लाठियों के दम पर ही सामना कर रहे थे।

तेजसिंह को चार और लज्जाराम व पुरुषोत्तम की देह में दो–दो गोलियाँ धँस चुकी थी। तेजसिंह ने बंदूक छीनी थी, उन्हें तलवार का घातक घाव भी लगा। घायलों को चिकित्सालय ले जाया गया पर एक महिला की मर्यादा रक्षा और सहायता हेतु उनके प्राण न्यौछावर हो गए। तीनों वीरों को मरणोपरांत 'अशोकचक्र' से सम्मानित किया गया। ध्यान देने योग्य बात है कि आई हुई आपत्ति का सामना स्थानीय स्तर पर पूरे साहस के साथ करने वाले ही महान बनते हैं। जो वीर होते हैं वे परिस्थितियों व साधनों की कमी का रोना नहीं रोते रहते। एक महिला की प्राणरक्षा हेतु डाकुओं की सशस्त्र टोली से भिड़कर इन ग्रामीणों ने इसी बात को चरितार्थ किया था।

काफल

– पवन चौहान

आज माँ–पिता जी व दोनों बच्चे वनिका और कण्व अपनी गाड़ी में काफल लाने पहाड़ की ओर निकल पड़े थे। कण्व तीसरी में और वनिका पांचवीं में पढ़ती है। शहर में रहने वाले इन बच्चों ने पहली बार पिछले वर्ष ही काफल खाया था। उनके दादा जब शहर आए थे तो अपने साथ इसे लेकर आए थे। उन्हें इसका स्वाद इतना भाया कि दादा के साथ गाँव चलने की जिद करने लगे। दादा ने उन्हें बताया कि अब इसकी ऋतु समाप्त हो रही है। अगले वर्ष मैं तुम्हें अपने साथ पहाड़ पर लेकर चलूँगा और हम खूब काफल खाएँगे।

इस बार दादा के साथ काफल लाना तय था। लेकिन दादा आठ महीने पहले ही इस दुनिया से चल बसे थे। पूरा परिवार दादा के जाने से टूट गया था। बच्चों की दादा के साथ काफल लाने की इच्छा भी अधूरी ही रह गई थी। इस वर्ष काफल का मौसम फिर आ चुका था। दादा ने उन्हें बताया था कि मई–जून के महीने में पहाड़ काफल से लद जाते हैं। बच्चों को एक दिन अचानक ही काफल की याद हो आई। अब वे अगली कक्षा में थे। कुछ दिनों के लिए वे गाँव भी जा रहे थे, दादा से जुड़ी कुछ रीतियों को निभाने।

गाँव से ही आज उनकी गाड़ी पहाड़ के सर्पीले रास्तों पर काफल लाने तेजी से आगे बढ़ती चली जा रही है। वनिका को न जाने क्या विचार आया। वह बोली– ''पिता जी! काफल की खुदाई के लिए तो हमने गाड़ी में कोई भी सामान नहीं रखा है।''

यह सुन माँ–पिता जी के चेहरे पर एक मुस्कान तैर गई।

''वैसे काफल कहाँ लगते हैं पिता जी?'' कण्व ने पूछा। ''बेटा! पेड़ पर लगते हैं।''

''सच बताओ पिता जी!'' वनिका बोली।

''अरे बेटा! सच में पेड़ पर ही लगते हैं।'' माँ ने उत्तर दिया।

''इसका कितना बड़ा पेड़ होता होगा?'' कण्व ने पूछा।

''हमारे बगीचे के संतरे के पेड़ से लगभग दुगुना।'' माँ बोली।

''पर यह कैसे हो सकता है? इतने बड़े पेड़ पर इतना छोटा–सा दाना!'' वनिका कुछ सोचते हुए बोली।

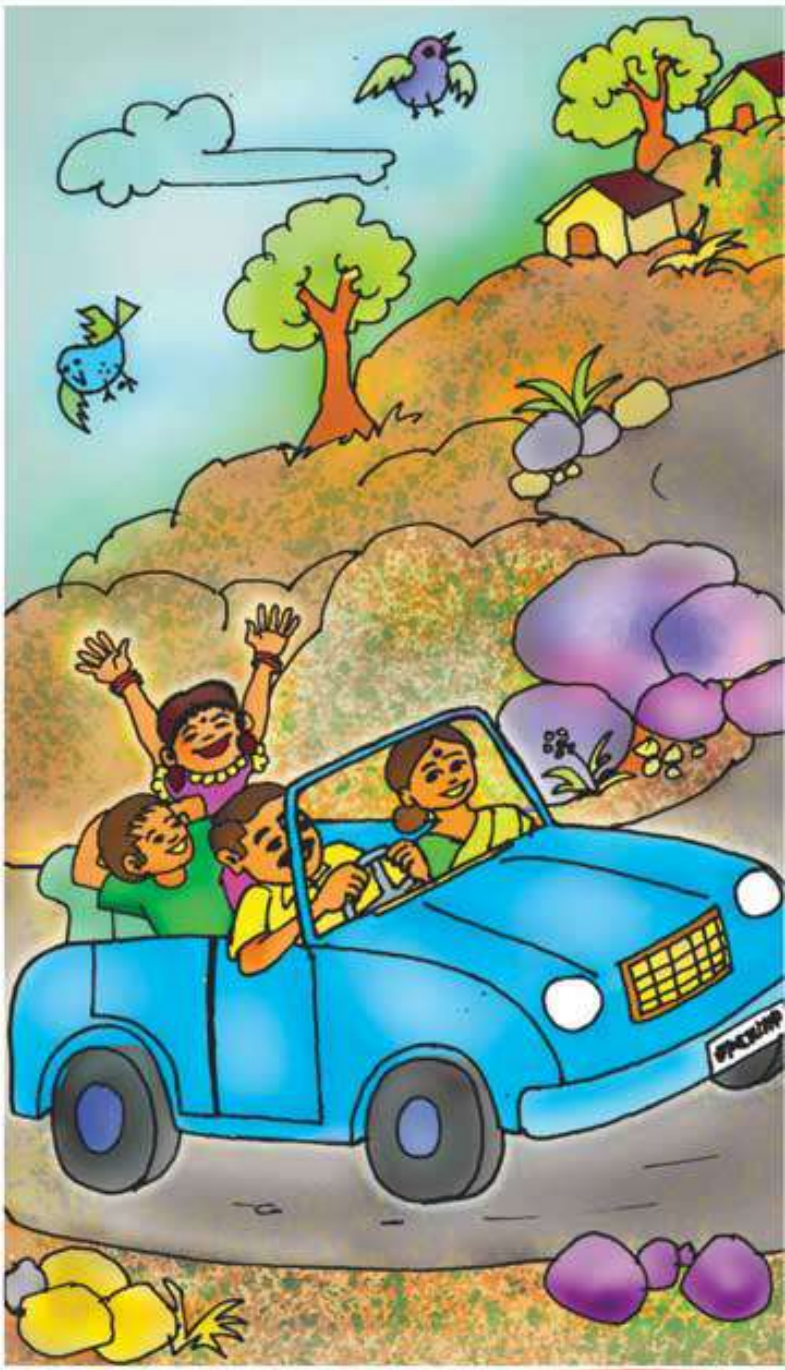

''हो सकता है बेटा!'' पिता जी ने कहा।

''मुझे विश्वास नहीं हो रहा है।'' वनिका बोली।

''क्यों?''

''आप झूठ बोल रहे हैं शायद।'' कण्व ने शंका व्यक्त की।

''तुम्हें ऐसा क्यों लग रहा है?''

''क्योंकि पिता जी! यह तो बहुत ही छोटा-सा दाना होता है। और मुझे लगता है, इसका छोटा ही पौधा होता होगा।'' कण्व ने अपनी बात रखी।

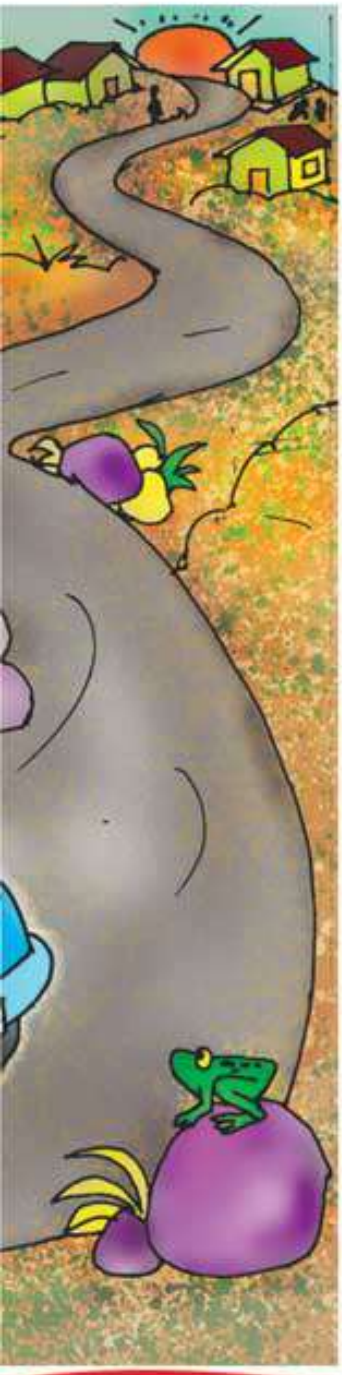

''अरे बेटा! पेड़ के बड़े और छोटे, कई आकार होते हैं।'' माँ ने जानकारी दी।

''मुझे विश्वास नहीं हो रहा है। सच-सच बताओ न! कहाँ लगते हैं काफल पिता जी?'' वनिका बोली।

दोनों को जब बात का विश्वास नहीं हो रहा था तो पिता जी ने उन्हें छेड़ने के लिए बात को ही बदल दिया, ''बेटा! सच कहूँ?''

''जी पिता जी!'' दोनों एक-साथ बोले।

''काफल इन पेड़ों की जड़ों में लगते हैं।'' पिता जी गंभीर होकर बोले।

''जड़ों में!'' वनिका हैरान थी।

''हाँ बेटा! जड़ों में ही।''

''अरे पिता जी! यदि ये जड़ों में होते तो उनमें मिट्टी लगी होनी थी।'' कण्व भी बोला।

''अरे बेटा! आलू, चुकंदर, गाजर को जब आप खूब अच्छी तरह से धोते हो तो उनमें मिट्टी कहाँ रह पाती है।''

''हाँ, यह बात तो है।'' कण्व मानते हुए बोला।

''तो फिर, अब तुम्हें उत्तर मिल ही गया होगा।''

''इसका अर्थ ये मूँगफली के गुच्छों की तरह लगते होंगे।'' वनिका ने स्वयं कल्पना की।

''तुम्हें पता है, इनके बाहर छिलका होता है जिसे तोड़कर यह फल निकलता है, मटर के दाने की तरह!'' पिता जी ने एक और बात उसमें जोड़ दी।

''हाँ-हाँ, ऐसा ही होगा।'' कण्व ने समर्थन किया।

माँ इनकी बातों को सुन मन ही मन मुस्कुरा रही थी। पिता जी बच्चों को छेड़ने का आनंद ले रहे थे। उनकी गाड़ी देवदार के पेड़ों से होती हुई पहाड़ की टेढ़ी-मेढ़ी सड़कों पर दौड़ रही थी। वे कार के शीशे खोले जहाँ ठंडी हवाओं का आनंद ले रहे थे वहीं पहाड़ की इस खूबसूरती को भी निहार रहे थे। उन्हें रास्ते में भेड़-बकरियों का बड़ा-सा झुंड भी मिला जिसे चरवाहे जंगल की ओर ले जा रहे थे। उन्हें बड़े आराम से अपनी गाड़ी वहाँ से निकालनी पड़ी। गर्मियों में ये अपनी भेड़-बकरियों को पहाड़ के ठंडे वातावरण में लेकर आते हैं। दोनों बच्चों ने बकरी और भेड़ के छोटे बच्चों को गोदी में उठाकर चित्र भी लिए। इस रास्ते जब वे पक्षियों को उड़ते और बैठे देखते तो आनंदित हुए जा रहे थे। आज उन्होंने पहली बार बहुत कुछ नया देखा था। जंगल में एक ओर बैठकर जब उन्होंने नालू के ठंडे पानी संग दोपहर का भोजन किया तो उसका स्वाद ही मजेदार था। उन्हें गर्मी की इस ऋतु में पहाड़ पर घूमना बहुत ही अच्छा लग रहा था। वे पहली बार पहाड़ की इतनी ऊँचाई पर आए थे।

वे कुछ दिन पहले गाँव पहुँचे थे। बातों-बातों में जब काफल की बात चली तो रमेश काका ने उन्हें बताया कि काफल स्वयं लाने का आनंद ही कुछ और

होता है। मनोरंजन के साथ यह एक रोमांचक यात्रा बन जाती है। बस, फिर क्या था। तब से दोनों बच्चे स्वयं काफल लाने के लिए उत्साहित हो गए थे।

काका ने यह भी बताया कि तुम्हारे पिता जी और मैं कई बार पहाड़ पर पैदल चढ़े हैं। काफल और बुरांश को लाने। तब गाड़ियों की ऐसी सुविधा नहीं थी। गाँव की पूरी टोली योजना बनाती थी और हम समूह में सुबह के अँधेरे में ही रोटी बाँध निकल पड़ते थे काफल या बुरांश लाने। यह बहुत थकान भरी यात्रा होती थी। लेकिन आनंद बहुत आता था।

गाड़ी ने अपनी गति बराबर पकड़ी हुई थी। तभी वनिका चिल्लाई, ''पिता जी! रुकिए।''

''क्यों बेटा?''

''मैंने काफल की तरह कुछ देखा।''

''अरे! तुम कैसे देख सकती हो उन्हें। वे तो जड़ खोदकर ही दिखेंगे न!'' पिता जी ने समझाया।

''तो शायद मैंने कुछ और ही देख लिया होगा।'' वनिका अपने में ही उलझ गई थी।

इस बार कण्व चिल्लाया, ''पिता जी! गाड़ी को रोको। मैंने भी काफल की तरह कुछ देखा।''

''अरे! तुम उन्हें बिना खोदे कैसे देख सकते हो बच्चों? तुमने शायद कुछ गलत ही देख लिया है।''

पिता जी ने गाड़ी की गति अब थोड़ी कम कर दी थी। वे अब उचित स्थान पर आ चुके थे।

कण्व ने फिर शोर मचाया, ''देखो, यहाँ भी वही हैं जैसे दादा हमें लाए थे। वही छोटे-छोटे लाल और मैहरून रंग के दाने।''

''अरे नहीं बेटा! काफल पेड़ पर थोड़ी ही न होते हैं।'' हल्का-सा छेड़ते हुए पिता जी बोले।

''पर पिता जी! यह तो पेड़ पर ही हैं। वह देखो।''

पिता जी ने अब तक गाड़ी रोक दी थी। वे काफल के सही ठिकाने पर थे।

''पक्का! पेड़ पर ही होते हैं न? नीचे उतरकर जाँच लो जरा। कहीं यह कुछ और ही न हो।'' पिता जी ने कहा।

माँ इशारों में ही पिता जी को अब बच्चों को अधिक न सताने के लिए कह रही थीं।

सड़क के साथ ही एक छोटा-सा पेड़ काफल से लदा था। दोनों ने मुट्ठी भरकर उन्हें तोड़ा और कुछ दाने मुँह में डाल लिए। खुशी में दोनों एक साथ बोले- ''अरे पिता जी! यह काफल ही तो हैं। हम इनका स्वाद नहीं भूल सकते।''

''सच में ये काफल ही हैं न?'' पिता जी ने उन्हें फिर से छेड़ने के अंदाज में कहा।

''अरे हाँ पिता जी! बिलकुल काफल ही हैं। वैसे ही जैसे दादा जी शहर से लेकर आए थे।'' कहते-कहते वनिका का गल भर आया।

''अरे दीदी! नीचे देखो और ऊपर की पहाड़ी की तरफ भी। यहाँ तो सब जगह काफल ही काफल हैं।'' कण्व खुशी में चिल्लाता है।

आँखें पोंछती हुई वनिका के चेहरे पर मुस्कान दौड़ आई थी। वह माँ-पिता जी की ओर देखते हुए बोली- ''अब मैं समझी। आप लोग कब से हमारा मजाक बना रहे थे न! काफल तो सच में पेड़ पर ही लगते हैं। आप सही थे पिता जी।'' खुशी के साथ वनिका पिता जी के गले से लिपट गई थी।

कण्व पेड़ की टहनी को नीचे खींचकर माँ के साथ काफल निकालने में व्यस्त था।

- महादेव, मण्डी (हि. प्र.)

अच्छे बच्चे

– लक्ष्मीप्रसाद गुप्त 'किंकर'

मुँह ढँक कर हम नहीं सोयेंगे।
अपना स्वास्थ्य नहीं खोयेंगे।।
स्वच्छ हवा साँसों में जाती।
कोई बीमारी ना आती।।

बड़े सबेरे नित जागेंगे।
ईश्वर से विद्या माँगेंगे।।
पहले तन को स्वच्छ करेंगे।
अंतरमन को स्वस्थ्य करेंगे।।

योग और व्यायाम करेंगे।
कुछ घर का भी काम करेंगे।।
चित्त लगाकर खूब पढ़ेंगे।
कभी किसी से नहीं लड़ेंगे।।

गोमाता का दूध पियेंगे।
कभी शाक का सूप पियेंगे।।
फल भी खायेंगे भरपूर।
चॉकलेट चुटकी से दूर।।

चने अंकुरित हमको भाते।
मूँगफली के संग गुण खाते।।
दाल–भात भाजी भी भाती।
माँ खिलवाती गरम चपाती।।

मातु–पिता का करते मान।
गुरुजन का करते सम्मान।।
हम वीरा बहनों के भाई।
भारत के हैं वीर सिपाही।।

हम अच्छे इंसान बनेंगे।
मातृभूमि की शान बनेंगे।।
झूठे नहीं हैं पूरे सच्चे।
इसीलिये हम अच्छे बच्चे।।

– ईशानगर छतरपुर (म. प्र.)

खेलो खेल

अपने दोस्तों से पूछो क्या वे दो गिलासों के ऊपर एक रखकर उस पर गिलास टिका सकते हैं? जब वे कोशिश करके ऐसा न कर पाएं तो....

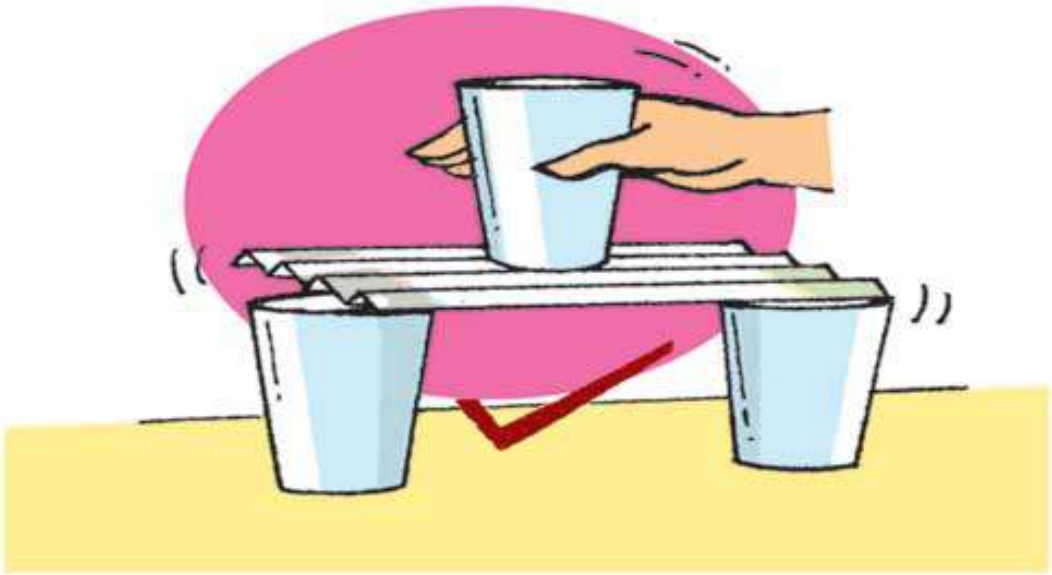

तुम कागज को चित्र 2 की तरह मोड़ो और दो गिलासों के बीच उन पर रखे कागज पर गिलास टिका कर दिखा दो।

नटखट किट्टू

– सुधा रानी तैलंग

बहुत पुरानी बात है। चम्पक वन में एक बंदर रहता था टिंकू। टिंकू की माँ सुंदरी उसको जन्म देते ही मर गई थी। बिन माँ के टिंकू को जंगल के सभी जानवरों के लाड़–प्यार के कारण टिंकू उधमी होता जा रहा था। वह कभी किसी की पूँछ खींच लेता तो कभी किसी के कान मरोड़ कर भाग जाता। जंगल के वयोवृद्ध हाथी दादा, लोमड़ी मौसी, भालू काका उसे समझाने पर भी टिंकू की शरारतें कम होने का नाम ही नहीं लेती।

टिंकू की दोस्ती साथी बंदरों से नहीं थी, बल्कि कालिया कौआ, हीरामन तोता, मिक्की चूहा से थी।

पहाड़ी के नीचे एक बगीचे में माली ने बगीचे में आम, अमरूद, पपीता व केले के पेड़ लगा रखे थे। टिंकू एक दिन उछल–कूद करते–करते अकेले ही वहाँ जा पहुँचा। केले व अमरूद जी भरकर खाये। पेट भर गया तो कच्चे फल तोड़कर फेंक दिये। माली जब शाम को लौटा तो देखकर बहुत दुखी हुआ।

दूसरे दिन भी टिंकू बगीचे में जा पहुँचा। उसने फल खाये व बाद में डालियों पर लटक–लटककर उन्हें तोड़ दिया। बूढ़ा माली यह सब छिपकर देख रहा था वह जब तक डंडा लेकर दौड़ा तब तक टिंकू एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर छलांग लगाकर छूमंतर हो गया।

बूढ़ा माली जान चुका था कि अब तो यह नटखट बंदर प्रतिदिन यहाँ आयेगा और उसके हरे–भरे बगीचे को उजाड़ेगा। माली गाँव के एक मदारी के

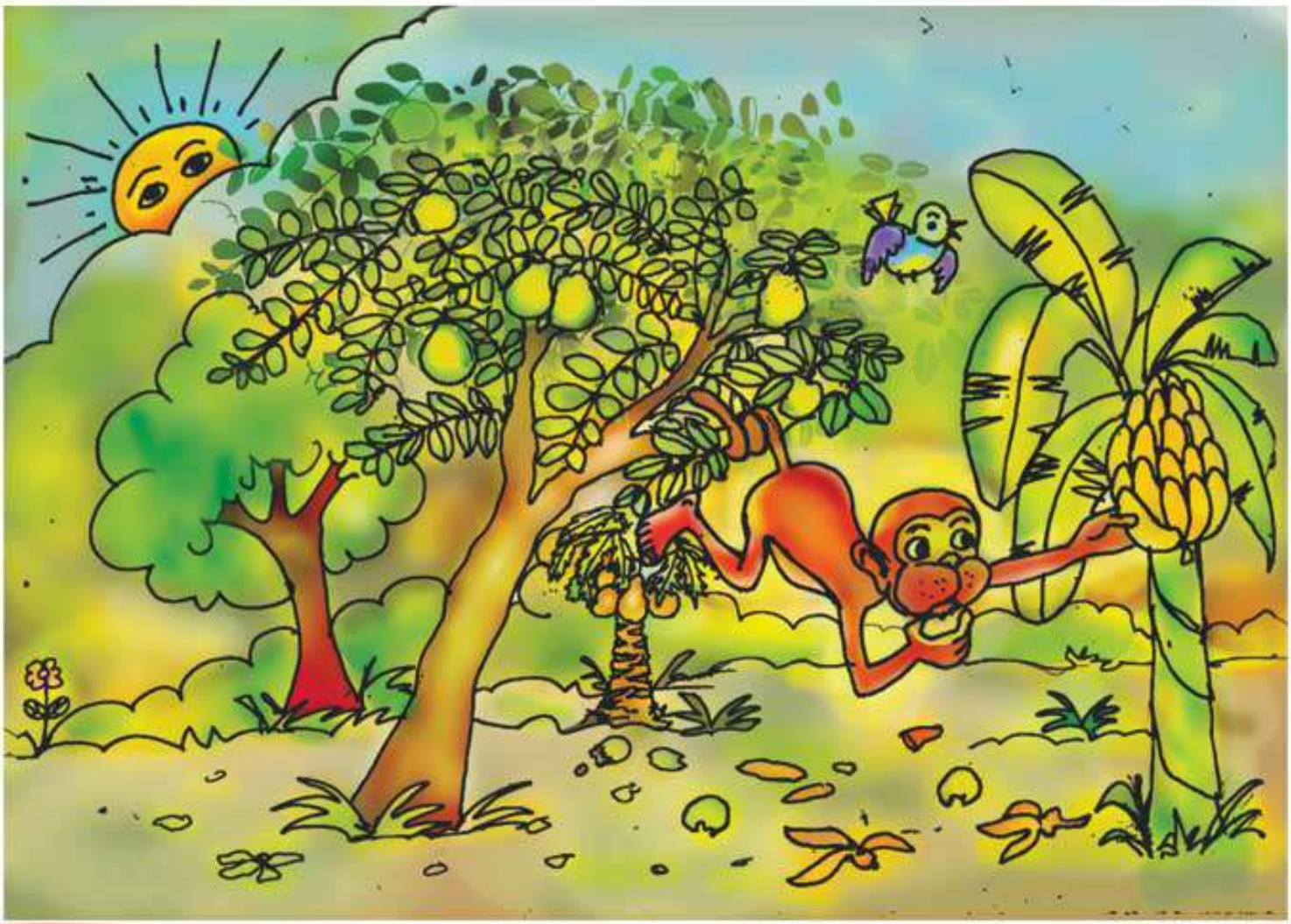

पास गया और उसे अपनी परेशानी बताई। मदारी को बूढ़े माली पर दया आ गई, वह उसकी सहायता करने को तैयार हो गया।

दूसरे दिन जब टिंकू बंदर सुबह-सुबह उछलते-कूदते बगीचे में जा पहुँचा। अमरूद खाने पेड़ पर ज्यों ही छलांग लगाई। जाल के छेद में उसके पैर फँस गये। खों-खों करके उसने पहले अपना गुस्सा जतलाया फिर हाथ-पैर पटके पर तब तक मदारी व उसके साथी ने उसे जाल में लपेटकर बाँध लिया और बस्ती में ले जाकर एक छोटे से कमरे में बंद कर दिया।

जंगल की खुली हवा में मुक्त रूप से उछल-कूद करने वाला टिंकू बंदर भला एक कमरे में बंद होकर कैसे रह सकता था। वह खूब चिल्लाया-रोया पर उसकी आवाज कौन सुनता। आज उसे अपने मित्रों की बात याद आने लगी। अपनी गलती पर पश्चाताप होने लगा। काश! वह आज अकेला छिपकर नहीं आता। दोपहर में खिड़की से मदारी ने उसे केले खाने को दिये व एक बरतन में पानी भी, पर उसने केले छुए तक नहीं।

जब देर रात तक टिंकू बंदर चम्पक वन नहीं पहुँचा तो पूरे जंगल में हाहाकार मच गया। भालू काका, लोमड़ी मौसी, हाथी दादा बेहद चिंतित होने लगे। उधर टिंकू के मित्र कालिया कौआ, व भूरा चूहा परेशान थे।

सुबह हीरामन तोते ने कालिया को बताया कि कल मैंने गाँव के मदारी से बूढ़े माली को किसी बंदर को पकड़ने के लिये बात करते सुना था। मदारी के पास एक जाल भी था।

सभी मित्रों ने मिलकर टिंकू को ढूढ़ने की ठान ली। कालिया कौए को यह काम सौंपा गया क्योंकि वह आसानी से उड़कर कहीं भी पहुँच सकता था।

रस्सी में बंधा टिंकू बंदर भी मदारी के डंडों की मार के आगे हार मान चुका था। दोपहर में डंडा लेकर

मदारी आया और टिंकू को करतब सिखाने का प्रयत्न करने लगा। शाम को मदारी दरवाजे की कुंडी बंद कर चला गया। कालिया ने जंगल की बस्ती के घरों में बैठकर और काँव-काँव की आवाज की। टिंकू को अपने मित्र कालिया कौए की आवाज सुनाई पड़ी, वह खुशी से चीख पड़ा। उसने खों-खों करके कालिया को बुला लिया। कालिया ने खिड़की से टिंकू को रस्सी से बंधा देखा। कुछ ही देर बाद भूरा चूहा अपने साथी चूहों के साथ खिड़की के छेद से अंदर आ गया। अपने तेज दाँतों से टिंकू की रस्सी काट दी। कालिया ने अपनी चोंच से बाहर दरवाजे की कुण्डी धीरे-धीरे सरका दी। दरवाजा खुलते ही टिंकू अपने साथियों के साथ चम्पक वन की ओर भाग निकला।

टिंकू बंदर के वापस लौटने का समाचार पूरे जंगल में फैल चुका था। टिंकू को हाथी दादा ने समझाया कि यदि उसके मित्र सहायता नहीं करते तो उसे मदारी की कैद में ही रहना पड़ता। उसने अपनी गलतियों के लिए सबसे क्षमा माँगी।

टिंकू में अब बदलाव आ चुका था। अब टिंकू बंदर पहले जैसा उधमी, नटखट नहीं था। उसे सबक जो मिल गया था। जंगल के सभी पशु-पक्षी बहुत प्रसन्न थे। पूरे चम्पक वन में प्रसन्नता का वातावरण था।

- भोपाल (म. प्र.)

वागीश की कविताएँ

– वागीश 'दिनकर'

सफल जीवन

सूरज देता है गर्मी।
चन्दा देता है नरमी।।
सागर सिखलाता सहना।
पर्वत हमें अडिग रहना।।
पेड़ों से सीखा झुकना।
धरती से देना दुगना।।
फूलों सा मुस्काना है।
जीवन सफल बनाना है।।

प्यारे बच्चे

हम तो केवल बच्चे हैं। मन से सीधे सच्चे हैं।।
पाठ प्यार का पढ़ते हैं। आपस में न झगड़ते हैं।।
भेदभाव को नहीं सहें। हम सब मिलकर एक रहें।।
यही बात बस नेक है। सबका मालिक एक है।।

बादल

मैं बादल जल बरसाता।
फसलों को मैं लहराता।।
नदियाँ मुझसे जल पातीं।
सागर की फूले छाती।।

जंगल का राजा

छुट्टी पर जब शेर गया। बंदर में था जोश जगा।।
बोला– मैं अब राजा हूँ। जंगल का महाराजा हूँ।।
चींटी, हाथी निडर रहें। कोई दुखड़ा नहीं सहे।।
शेरों की क्या है हस्ती। जो रोके अपनी मस्ती।।
तभी शेर आया अंदर। डरकर भाग गया बंदर।।

– पिलखुआ, हापुड़ (उ. प्र.)

तू भी पागल मैं भी पागल

– रजनीकांत शुक्ल

मेघालय राज्य को अंग्रेज लोग पूर्व का स्काटलैंड कहते थे। क्यों न कहते यहाँ का मौसम जलवायु उन्हें परदेस में अपने देश के वातावरण की याद दिलाती थी। सुन्दर ऊँची–नीची पहाड़ियाँ और उनसे निकलकर बहते झरने, सदानीरा नदियाँ, हरी–भरी घाटियाँ, सुन्दर वनस्पति और ऐसे सीधे–सादे भोले–भाले लोग आखिर उन्हें कहाँ मिलते।

इस राज्य की राजधानी शिलांग है। जिसमें लाइतुमखाह नाम की एक जगह है। मेघालय में बोली जाने वाली भाषा खासी में लाइत शब्द का अर्थ है मुक्त और उमुखाह वहाँ से निकलने वाली एक नदी का नाम है। यह एक ऐसा स्थान है जहाँ से जाने के तीन रास्ते निकलते हैं। एक रास्ता हैप्पी वैली की ओर जाता है दूसरा उमप्लिंग की ओर और तीसरा रास्ता न्यू कॉलोनी की ओर जाता है।

इसी अपर न्यू कॉलोनी की एक सड़क पर वर्ष २००० के अप्रैल महीने में अट्ठारह तारीख को रूबेन लमयकि किन्ता अपने विद्यालय से बस द्वारा वापस लौट रहा था। उसकी आयु उस समय लगभग पंद्रह वर्ष की थी। मजे में रूबेन अपना स्टाप आने पर बस स्टैंड पर उतरा और मस्ती में झूमते घर की ओर चल पड़ा।

अगले कुछ पल उसके जीवन में एक बहुत बड़ा परिवर्तन लाने वाले हैं। वह इस बात से बिलकुल अनजान था। वह जिस रास्ते से घर की ओर जा रहा था उसी रास्ते पर पीछे से एक कुत्ता भी तेज गति से भागा चला आ रहा था। दोपहर का समय था उस समय सड़क पर और दूसरे राहगीर भी आ जा रहे थे। मन में कुछ ही देर में घर पहुँचने की बात सोचते हुए रूबेन तेज–तेज कदमों से आगे की ओर बढ़ा चला जा रहा था।

तभी अचानक पीछे से आ रहा वह कुत्ता उसके टखने में लिपट गया और उसने काट लिया। रूबेन को एकदम से समझ नहीं आया कि यह हो क्या गया है? जब तक वह सँभले–सँभले, कुत्ता उसे काटकर आगे बढ़ चुका था। रूबेन ने देखा कि कुत्ता अपना काम कर गया था उसके टखने में कुत्ते के दाँत लग चुके थे और वहाँ से अब खून बहना शुरू हो चुका था।

अभी वह अपने घायल टखने को देख ही रहा था कि आगे जा रहा कुत्ता अगली राहगीर महिला पर झपट पड़ा। जब तक वह कुछ समझें, तब तक वह कुत्ता उनकी टाँग को अपने दाँतों से काटकर और आगे बढ़ चुका था। वे बेचारी अभी अपने घाव को देख–देखकर दुखी हो ही रहीं थीं कि उसने सबके साथ देखा कि उसी कुत्ते ने उनके आगे जा रही एक बुजुर्ग महिला के ऊपर हमला कर दिया।

अचानक उस कुत्ते के आक्रमण से वे बुजुर्ग महिला श्रीमती लिंगडोह स्वयं को सँभाल न सकीं और घबराकर सहायता के लिए चिल्लाते हुए जमीन पर ही गिर गईं। सड़क पर बहुत से लोग आ–जा रहे थे। किन्तु किसी की भी हिम्मत उस पागल कुत्ते से उस वृद्ध महिला को बचा पाने की नहीं हो पा रही थी। उधर रूबने अब तक सँभल चुका था। यद्यपि वह स्वयं उस पागल कुत्ते के हमले का पहला शिकार बन चुका था मगर फिर भी उसने सोचा कि अभी उसके देखते–देखते उस कुत्ते ने दो लोगों पर हमला कर दिया अगर उसे रोका न गया तो वह आगे न जाने कितने लोगों को घायल करेगा।

यही सोचकर वह तेजी से आगे बढ़ा और अपने कँधे पर लटका विद्यालय का बस्ता एक ओर फेंकते हुए दौड़कर उस जगह पहुँचा जहाँ वह पागल कुत्ता जमीन पर पड़ी उस महिला के शरीर को जगह-जगह काट रहा था और वह महिला उससे बचने के लिए कुछ भी नहीं कर पा रही थीं। बस सहायता की गुहार लगा रही थी, जिसे उस सड़क पर आते-जाते तमाशाबीन लोग चुपचाप खड़े होकर सुन रहे थे।

मगर रूबने ने वह काम नहीं किया और उनके बीच में जाकर कूद पड़ा। उसने सबसे पहले उस कुत्ते का वह जबड़ा अपने दोनों हाथों से कसकर पकड़ लिया जिससे वह उस महिला को काटे जा रहा था। मजबूत ढंग से पकड़े गए जबड़े को उसने महिला से अलग कर हटाया। फिर उसने कुत्ते को जमीन पर लिटा दिया।

कुत्ता रूबेन के हाथों की पकड़ से छूटने की भरसक कोशिश कर रहा था किन्तु रूबेन की आँखों में उस समय चिंगारियाँ निकल रहीं थीं। उस कुत्ते ने देखते-देखते न केवल उसे बल्कि श्रीमती राजभंग और श्रीमती लिंगडोह पर भी हमला कर उन्हें बुरी तरह घायल कर दिया था। जो पागलपन कुत्ते में था वही पागलपन का जुनून अब रूबेन की आँखों में भी दिखाई देने लगा था।

रूबेन ने एक पल के लिए कुत्ते का जबड़ा छोड़ा और तत्क्षण उसकी गर्दन पर अपने फौलादी पंजे टिका दिए। कुत्ता भी रूबेन का इरादा समझ चुका था उसने रूबेन के हाथों से स्वयं को बचाने की भरपूर जी तोड़ कोशिश की। मगर रूबेन ने अपनी पकड़ जरा भी ढीली नहीं की।

तमाशबीनों की भीड़ अपनी साँस रोककर यह लोमहर्षक दृश्य देख रही थी जिसमें कभी भी बाजी पलट सकती थी। करीब दस मिनट तक दोनों में यह जद्दोजहद होती रही। कभी लगता कि पागल कुत्ता खुद को रूबेन के चंगुल से छुड़ा लेगा मगर ऐसा करने में वह असफल रहा। रूबेन ने उस कड़े संघर्ष में विजय पाई।

पागल कुत्ते के शांत होते ही तमाशा देख रहे लोग आगे बढ़े और तुरन्त दोनों महिलाओं को उठाया। रूबेन उन दोनों को टैक्सी में बैठाकर चिकित्सालय पहुँचे। मरहम-पट्टी के बाद उन तीनों को ही एंटी रैबीज का इंजेक्शन लगाया गया। बाद में वे अपने-अपने घर गए।

इधर भरी सड़क पर हुए इस हादसे ने मीडिया के लोगों का ध्यान अपनी ओर खींचा। अगले ही दिन रूबेन की यह बहादुरी की दास्तान समाचार-पत्रों में सुर्खी बनी। सुनने-जानने वाले सभी लोगों ने रूबेन की त्वरित बुद्धि के साहसपूर्ण निर्णय की सराहना की और कहा कि इस बहादुरी के लिए तो रूबेन को पुरस्कृत किया जाना चाहिए।

बस फिर क्या था रूबेन के नाम का प्रस्ताव बनाकर भेज दिया गया और चयन समिति ने राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार २००० की सूची में रूबेन का नाम चुन लिया। २००१ के गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या को देश के प्रधानमंत्री जी ने देश की राजधानी दिल्ली में अन्य चुने गए बच्चों के साथ रूबेन को राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार प्रदान किया।

पुरस्कार पाकर रूबेन ने कहा कि- ''मैंने तो पागल कुत्ते के साथ लड़ते समय ऐसा नहीं सोचा था। उस समय तो मेरे मन में बस यही भाव था कि इस कुत्ते ने जैसे मुझे काटा है उसी तरह वह किसी दूसरे को न काट पाए।

नन्हें दोस्तो,

चाह यही हो, प्रेम हृदय में सबके लिए बराबर,
रहें कहीं भी पर आपस में, हम सब भाई बिरादर।
लेकिन कष्ट दिया तो समझो अपना दुश्मन मुझको,
जहाँ गलत होता देखो तुम पाओ हमें वहाँ पर।

- दिल्ली

मछली-मछली कित्ता पानी

– उमाकांत मालवीय

श्री उमाकांत मालवीय बाल साहित्य के कुशल रचनाकार है। २ अगस्त १९३१ को मुंबई में जन्में श्री मालवीय ११ नवम्बर १९८२ को इलाहाबाद में हम सबसे अंतिम विदा ले गए।

मछली-मछली कित्ता पानी?
सात जनम में इत्ता पानी।
जल में है कितने घड़ियाल?
ऐसे-वैसे बड़े बवाल।
फिर भी कैसे जान माल को
रखती हो तुम कहाँ सम्हाल?
कभी-कभी तो हमें सुना दो
अपनी बीती हुई कहानी।

चिकने चुपड़े तेरे अंग,
चितकबरे मन भाते रंग।
पानी ही तेरा संसार,
पानी में तेरा घरबार।
तुम्हें जुकाम न होता पलभर,
यह सब भी तो है हैरानी।
मछली-मछली कित्ता पानी?
सात जनम में इत्ता पानी।

कछुए को मिल गया काम

– वैभव कोठारी

साक्षरवन में रहने वाले सभी जानवर पढ़े–लिखे थे। राजा शेरसिंह ने पाठशाला जो खुलवा दी थी। सभी के लिए शिक्षा अनिवार्य थी। शिक्षक नील गाय पाठशाला में सबको पढ़ाती थी। साक्षर होने के कारण सभी के पास कोई न कोई काम था इसलिए सभी बहुत प्रसन्न थे। केवल कछुआ ही बेरोजगार था। ऐसा नहीं था कि कछुआ पढ़ा–लिखा नहीं था लेकिन उसकी सुस्त चाल के कारण कोई भी उसे काम पर नहीं रखता था। सभी उससे कहते थे– ''तू इतना धीरे–धीरे चलता है, कोई काम आज करने के लिए कहेंगे तो उसे करने में पूरा सप्ताह लगा देगा।'' बेचारा कछुआ करे भी तो क्या? प्रकृति ने उसे धीरे–धीरे चलने वाला ही बनाया है। अपनी बेकारी से परेशान कछुआ तालाब किनारे उदास बैठा रहता था। काम पाने के लिए वो वन में कई वरिष्ठ जानवरों से मिल चुका था लेकिन उसे हर जगह निराशा ही हाथ लगी थी। कछुए ने राजा शेरसिंह को भी कोई काम देने के लिए आवेदन किया था। वह सोचता रहता कि पढ़ा–लिखा तो वह भी है किन्तु अपनी सुस्त चाल के कारण उसे कोई काम नहीं मिल रहा है।

राजा शेरसिंह ने देखा कि कछुए के द्वारा लिखे गए आवेदन पत्र में सुन्दर लिखावट है। कछुए की हिन्दी भी बहुत अच्छी है। कछुए को वर्तनी ज्ञान भी है। राजा शेरसिंह कछुए की सुन्दर–स्पष्ट लिखावट देखकर प्रसन्न हुए तथा शीघ्र ही उसे कोई नौकरी देने का आश्वासन भी दिया।

साक्षरवन में नया डाकघर खुलने वाला था। डाकिये के पद के लिए साक्षात्कार होने वाले थे। कछुए ने भी आवेदन किया। कछुए को भरोसा था कि वह डाकिया तो बन ही जाएगा। उसकी खुशी का ठिकाना

नहीं था। इस नौकरी को पाने की खुशी में वह रातभर सो भी नहीं पाया था। बन्दर, भालू, सियार सहित कई जानवरों तथा पक्षियों ने डाकिये के पद के लिए आवेदन किए थे। ऐसा नहीं कि वे सब भी बेरोजगार थे। वें सभी अपनी वर्तमान नौकरी से अधिक आय वाली नौकरी पाना चाहते थे।

दिन गुजरते गए और साक्षात्कार वाला दिन भी आ गया। साक्षात्कार लेने के लिए दूसरे जंगल से दल आया था। पाँच अधिकारियों की इस दल में अजगर प्रमुख अधिकारी थे। कछुआ ठीक समय पर साक्षात्कार देने पहुँच गया था वो मन ही मन वन देवता का नाम जप रहा था। तथा प्रार्थना कर रहा था कि उसका चयन हो जाए। हिरणबाबू ने उसे अन्य प्रतिभागियों के साथ बैठने को कहा। कछुआ अपनी बारी की प्रतीक्षा करने लगा। अन्य प्रतिभागियों के साक्षात्कार के बाद कछुए की बारी आई। उसने बड़ी सभ्यता से ''मैं अन्दर आ सकता हूँ, श्रीमान!'' पूछकर कमरे में प्रवेश किया। सभी अधिकारियों का अभिवादन करके नियत कुर्सी पर बैठ गया। अजगर अधिकारी कछुए की फाइल को बड़े गौर से पढ़ रहे थे। उन्होंने कछुए से कहा कि– ''सभी कक्षाओं में आपके अंक तो बहुत अच्छे रहे हैं।'' साक्षात्कार प्रारम्भ हुआ। अधिकारियों ने उससे पूछा कि– ''वह डाक कैसे बाँटेगा, जबकि वह उड़ नहीं सकता। पेड़ पर रहने वालों को डाक कैसे पहुँचा सकेगा? कछुआ तो पेड़ पर चढ़ भी नहीं सकता। इसके अलावा कछुए की चाल भी धीमी है तो फिर डाक देर से पहुँचेगी।

अजगर अधिकारी स्वयं भी धीमे चलते थे। अत: वे कछुए की मजबूरी समझते थे। उन्हें कछुए से सहानुभूति थी पर फिर भी डाकिया के पद के लिए कछुए का चयन नहीं हुआ। यह बात जब राजा शेरसिंह को पता चली तो उन्हें बहुत बुरा लगा।

साक्षरवन में डाकघर प्रारम्भ हो चुका था। बगुला, डाकिया बन गया था। पत्र आते और उनके

उत्तर भी लिखे जाते थे।

साक्षरवन में एक तालाब भी था। तालाब की मछलियों ने मगरमच्छ के द्वारा राजा शेरसिंह को एक शिकायती पत्र भेजा। उसमें लिखा था कि तालाब में रहने वाली मछलियों के लिए जो पत्र आते हैं उन्हें वे ले नहीं सकती। क्योंकि तालाब में जाते ही पत्र भीग जाते हैं। पढ़ने लायक नहीं रहते। अत: तालाब की मछलियों के पत्रों के लिए कुछ अलग व्यवस्था की जाए। मछली तालाब से बाहर आ नहीं सकतीं तथा पत्र तालाब में नहीं ले जाया जा सकता।

राजा शेरसिंह चिंता में पड़ गए। कुछ देर वे कुछ विचार करते रहे। तभी उन्हें कछुए की याद आई। शेरसिंह ने कछुए को बुलाया और तालाब के किनारे ही कछुए का एक कार्यालय खुलवा दिया। शेरसिंह ने कहा कि कछुआ मछलियों को उनके पत्र पढ़कर सुनाएगा तथा जवाबी पत्र भी लिखेगा। इसके बदले कछुए को डाकिये के बराबर वेतन दिया जाएगा।

इस प्रकार से बेकार कछुए को काम मिल गया और मछलियों की समस्या भी हल हो गई। साक्षरवन में अब कोई भी बेरोजगार नहीं था।

कछुआ नौकरी पाकर प्रसन्न था।

– खण्डवा (म. प्र.)

सूर्या

आत्मनिर्भर भारत की पहचान

लाइटिंग | अप्लायेंसेस

पंखे | स्टील और पीवीसी पाइप

इनोवेशन, क्वॉलिटी और विश्वसनीयता हमारी पहचान।

सूर्या के प्रोडक्ट केवल पूरे भारत में ही उपलब्ध नहीं बल्कि पूरी दुनिया के 50 से अधिक देशों को निर्यात किए जाते हैं। कम्पनी सभी ग्राहकों की ज़िन्दगी रौशन करने तथा सभी से इनोवेशन, गुणवत्ता और विश्वसनीयता का वादा करती है।

सूर्या रोशनी लिमिटेड

ई–मेलः consumercare@surya.in | www.surya.co.in suryalighting surya_roshni

दूरभाषः +91–11–47108000, 25810093–96 | टोल फ्री नंबरः 1800 102 5657

पुस्तक परिचय

श्री दीनदयाल शर्मा राजस्थान की धरती से एक ऐसे बाल साहित्य सर्जक हैं जिनकी लेखनी ने बच्चों के लिए बाल साहित्य की अनेक विधाओं में बहुत रचा है। वे हिन्दी में रचते हैं और राजस्थानी में भी, लगभग पाँच दशक होने को है उनकी इस सृजन यात्रा के। इस स्तंभ में उनकी अनेक पुस्तकों का एकत्र परिचय दे रहे हैं जिन पुस्तकों में मनोरंजन, आनंद, शिक्षा, प्रेरणा सब एक साथ रोचक ढंग से आपके लिए संजोए है 'टाबर टोली' के साहित्य संपादक श्री शर्मा जी ने।

एकता प्रकाशन चुरू -३३१००१ (राजस्थान) से प्रकाशित

५१ बाल पहेलियाँ
पहेलियों की मजेदार पुस्तक
मूल्य १५०/-

अपनी दुनिया सबसे न्यारी
५८ शिशु गीतों का अनूठा गुलदस्ता
मूल्य १५०/-

हम बगिया के फूल
३० बालगीत
मूल्य १५०/-

बोधि प्रकाशन एफ-७७ सेक्टर-९ रोड नं. ११ करतारपुर इण्डस्ट्रियल एरिया, बाईस गोदाम, जयपुर-३०२००६ (राजस्थान) से प्रकाशित

मित्र की मदद
६ मनोरंजन, शिक्षापूर्ण बालकहानियाँ
मूल्य ४०/-

रसगुल्ला
४४ मनोरंजक नन्हें नन्हें शिशु गीत
मूल्य ५०/-

कमलासन प्रकाशन मार्डन मार्केट बीकानेर (राजस्थान) से प्रकाशित

कुदरत की लीला है न्यारी
३० अनूठे, रोचक बालगीत
मूल्य १२०/-

प्रेरणास्पद बाल पहेलियाँ
विविध क्षेत्रों के ५५ महान व्यक्तियों पर रोचक व ज्ञानवर्द्धक पहेलियाँ
मूल्य १२०/-

श्री संतोष कुमार सिंह बाल साहित्य के सिद्ध शिल्पी हैं आपकी बाल साहित्य की ३० से अधिक पुस्तकें प्रकाशित है। प्रस्तुत है दो नवीन पुस्तकों का परिचय जो प्रकाशित की हैं साहित्य संगम प्रकाशन मोतीकुंज एक्सटेंशन मथुरा-२८१००१ (उ. प्र.) ने।

पुस्तकों वाला गाँव
यह आश्चर्य जनक सूचनाओं वाली रोचक जानकारियों भरी बाल एवं किशोरों के लिए कविता की बहुउपयोगी पुस्तक है- मूल्य १७०/-

बाल सजल सुगंधा
सजल हिंदी कविता में नई विधा है। उर्दू की गजल की तर्ज पर, पर अपना व्याकरण, अपना विधान लेकर नवीन गेय काव्य। विशेषता है कि इस पुस्तक में यह नई विधा बच्चों के लिए साधी गई है। अनूठा प्रयोग है यह। मूल्य १५०/-

मेघना ने बुलाई एम्बुलेन्स

– सनत कुमार

''भैया आज मोबाइल मेरे पास में ही छोड़कर जाना। मैं माँ को उसमें से वीडियो दिखाने वाली हूँ। अच्छे–अच्छे गीत सुनाने वाली हूँ। उनका मन बहलेगा।''

साढ़े दस वर्ष की थी मेघना। उसने सुबह–सुबह अपने बड़े भाई संदीप से ऐसा कहा।

अठारह वर्ष के संदीप ने दसवीं कक्षा पास करने के बाद पढ़ाई छोड़ दी थी। उसकी यह छोटी बहन कक्षा पाँचवीं की परीक्षा दे चुकी थी। अभी माँ के साथ घर पर रहती थी और माँ की देखभाल करती थी।

वे घर में तीन ही लोग थे। उनके पिता जी नहीं थे। उनकी माँ को अनेक प्रकार की चिन्ताओं ने पकड़ रखा था। बेचारी बहुत दिनों से बीमार भी पड़ी थी। घर का खर्च चलाने के लिये संदीप ही एक पुस्तकों की दुकान में काम करता था।

''हाँ मेघना! मोबाइल अवश्य छोड़ दूँगा।'' संदीप बोला।

''जानते हो मुझे भोजन बनाना आ गया है। बर्तन धोना भी आ गया है।'' वह बोली।

''और क्या–क्या आ गया है?'' संदीप ने पूछा।

''मुझे रोटी बनाना आ गया है। खिचड़ी बनाना आ गया है। इसके साथ–साथ कढ़ी बनाना भी आ गया है।'' मेघना चहकती हुई बोली।

''बहुत सुंदर।''

''आज दोपहर मैं बेसन–मट्ठा की जोरदार कढ़ी बनाने वाली हूँ। उसमें कढ़ी पत्ता और जीरे का तड़का लगाने वाली हूँ। मगर मिर्ची पाउडर को थोड़ा कम डालने वाली हूँ। देखना बहुत स्वादिष्ट और चटपटी लगेगी कढ़ी की सब्जी। तुम अँगुलियाँ चाटते रह जाओगे भैया।'' मेघना बोली।

''अरे वाह! तुमने कढ़ी बनाने की विधि कहा से ज्ञात की?'' संदीप ने पूछा।

''मोबाइल के यूट्यूब चैनल से।'' उसने बताया।

''वाह! यह तो बहुत गजब की बात हुई बहना। लेकिन मुझे तुम क्षमा करना। मैं दोपहर में भोजन करने नहीं आ पाऊँगा। क्योंकि मेरा मालिक आज मुझे बाहर भेजने वाला है। वैसे शाम तक आ ही जाऊँगा।'' संदीप बोला।

''भैया....''

''अरी पगली ठुनक मत। मेरा काम दूसरे की दुकान पर काम करना है। उसे तो करना ही पड़ेगा।

तभी तो पैसे मिलेंगे न।'' संदीप ने प्यार जताया।

उसके बाद दोनों भाई–बहन ने पोहे का नाश्ता बनाया। चाय बनायी। अलग से दूध गरम किया। माँ को खिलाया–पिलाया और स्वयं खाये–पीये।

तब संदीप साईकिल निकालकर काम पर जाने लगा।

''मोबाइल तो छोड़ जाओ।'' मेघना ने आवाज दी।

''ओ हो! मैं तो भूल ही रहा था। लो मोबाइल रखो। माँ का अच्छे से ध्यान रखना।'' संदीप ने कहा।

''ठीक है भैया! नमस्ते।''

कुछ देर में मेघना ने अपने नाजुक हाथों से माँ को नहलाया–धुलाया। स्वयं भी नहायी–धोयी। फिर भोजन बनाने के काम में लग गयी। मन में सोच रही थी कि भोजन के बाद ही मोबाइल चालू करेगी।

अभी सब कुछ ठीक–ठाक ही चल रहा था। किन्तु कुछ देर के बाद मेघना को अचानक लगा कि उसकी माँ के बिस्तर की ओर से कुछ आहट का आभास हुआ। मेघना ने तुरन्त गैस चूल्हा बन्द किया। माँ को देखने दौड़ी। देखा तो उसकी माँ अपने पैरों को हिला रही थी। साँसें तेज चल रही थीं। शरीर गरम था और माथे से कुछ पसीने की बूँदें भी निकल रही थीं।

वह माँ की गंभीर हालत को देखकर बहुत घबरा गयी। उसे बहुत रोना आ रहा था। उस समय किसी को चिल्ला भी नहीं सकती थी। आखिर सुनता भी कौन? क्योंकि उनका घर थोड़ा अंतर पर था। उस भोली बालिका के लिये एक अजीब दु:ख और संकट की स्थिति बन गयी थी।

लेकिन मेघना जल्दी ही संभल गयी थी। उसने बहुत बुद्धिमानी से काम लिया। वहीं बिस्तर के पास गिलास में पानी रखा हुआ था। उसने माँ को सहारा देते हुए चम्मच से दो घूँट पानी पिलाया।

संदीप भैया को कॉल भी कैसे कर सकती थी? आज उसका मोबाइल भी तो उसी के पास में था। फिर लगा कि अभी उसे रोना नहीं चाहिये। रोने से काम नहीं चलेगा। कुछ उपाय करना चाहिये। माँ को तुरन्त अस्पताल पहुँचाना चाहिये। उसने बिना देरी किये मोबाइल उठाया और एम्बुलेंस नम्बर १०८ को कॉल कर दिया।

घण्टी गयी। तब उधर से पूछा गया, ''हाँ बोल रहा हूँ। स्वास्थ्य विभाग। आपातकालीन सेवा एम्बुलेंस नम्बर १०८। आप कौन? कहाँ से बोल रहे हैं?''

इधर से उनको एक छोटी बालिका की दु:ख भरी घबरायी हुई आवाज सुनायी दी। ''भैया! मैं मेघना बोल रही हूँ.. मेरी माँ का स्वास्थ्य एकदम से खराब हो गया है.. मेरे अलावा घर में और कोई नहीं है। हमारे घर पर जल्दी से जल्दी आइये न! भैया जी प्लीज... ऊं ऊं ऊं...।''

''गुड़िया तुम रोओ मत। घबराओ मत। बस अभी हम पाँच मिनट में गाड़ी लेकर आते हैं। तुम्हारी माँ को कुछ नहीं होगा।'' उधर से कहा गया और फोन कट हो गया।

उस एम्बुलेंस नम्बर १०८ की सेवा में तैनात एक भले सज्जन ऑपरेटर ने ही फोन सुना था। ऑपरेटर द्वारा तत्काल इसकी सूचना संबंधित डॉक्टर साहब को दे दी गयी। उधर से आदेश मिला तो उसने इमरजेंसी गाड़ी को स्टार्ट किया। गाड़ी एक पल

इधर मेघना के कानों में जब गाड़ी का सायरन सुनायी पड़ा। तब उसे घो अँधेरे में उजाले सा अनुभव हुआ। कोई देवदूत सरीखे रक्षकों के आने सा संकेत हुआ। वह बेचारी नन्हीं जान अपनी माँ के पास बैठी हुई थी। उसके माथे को सहला रही थी और मन में अपनी माँ के ठीक हो जाने की कामना कर रही थी।

तभी एम्बुलेंस नम्बर १०८ मेघना के घर के पास आ पहुँची। एक स्वास्थ्यकर्मी ने काल किया और मेघना को बाहर बुलवाया। मेघना ने तपाक से दरवाजा खोला। उनको अपना परिचय दिया। तब दो व्यक्ति स्ट्रेचर लेकर भीतर आये। उस पर मरीज को आराम से लिटाया। गाड़ी के भीतर की सीट पर सुलाया। मेघना को भी उसके साथ बैठने को कहा। पलक झपकते ही गाड़ी अस्पताल को रवाना हो गयी।

मामला बिलकुल गंभीर था। डॉक्टरों ने मरीज को तुरन्त आई.सी.यू. में भर्ती कर लिया। समय पर उपचार शुरू किया और मरीज की जान को बचा लिया। अब वह खतरे से बाहर थी।

कक्ष के बाहर की बेंच पर मेघना गुमसुम बैठी हुई थी। डॉक्टर साहब ने उसके साथ अपनापन दिखाया और मुस्कुराते हुए बोले– ''बेटी! तुम्हारी माँ बिल्कुल ठीक है। यह अच्छा हुआ कि तुमने हमारी आपातकालीन सेवा एम्बुलेंस नम्बर १०८ को तुरन्त सूचना कर दी कुछ और देर हो जाती तो तुम्हारी माँ की स्थिति और भी गंभीर हो जाती। अब चिन्ता करने की बात नहीं है। इस समझदारी के लिये हम तुम्हें बहुत–बहुत शाबाशी देते हैं। लो इस खुशी में ये स्वादिष्ट लड्डू खाओ।''

''धन्यवाद डॉक्टर काका। आप लोगों ने मेरी माँ को बचा लिया।'' मेघना बोली।

''तुम्हें एम्बुलेंस नम्बर १०८ की जानकारी कैसे हुई?'' डॉक्टर ने यूँ ही प्रश्न किया।

''मेरे संदीप भैया ने मुझे एक बार बताया था। इसलिये नम्बर याद था।'' उसने कहा।

''बहुत अच्छा बेटी! तुम बहुत अच्छी हो। तुम्हारा संदीप भैया भी अच्छा है। कहाँ है वह? उसे बुलाओ।'' डॉक्टर साहब ने कहा।

''वह देखिए। मेरा भैया आ रहा है।''

मेघना ने बोलते ही उसका संदीप भैया अस्पताल आता हुआ दिख गया। उसे डॉक्टर साहब ने भी देखा। संदीप को कहीं से माँ के बारे में मालूम हो चुका था। वह सारा हालचाल जानने को यहाँ सरपट भागा–भागा चला आ रहा था। उसने डॉक्टर साहब से मुलाकात की। माँ को भी स्वस्थ होते देखा तो उसे बहुत तसल्ली हुई।

छोटी बहन की तो संदीप ने पीठ ही थपथपा दी, ''मेघना! यह तुम्हारी ही बड़ी बुद्धिमानी है। तुमने विडियो गेम खेलने की बजाय सही समय में मोबाइल का सही उपयोग किया। माँ को मोबाइल के माध्यम से अस्पताल में भर्ती कराने में तुम्हारा ही हाथ है। जिसके कारण यह विपत्ति टलकर प्रसन्नता में बदल रही है।''

तीसरे दिन अस्पताल से उनकी माँ की छुट्टी हो गयी थी। घर आने के बाद मेघना ने बनायी फिर वही बेसन–मट्ठा की कढ़ी की सब्जी। जिसका सबने आनन्द लिया। माँ–बेटा सहित दूसरे लोग भी उसके साहस भरे नेक काम की बहुत प्रशंसा कर रहे थे।

– रायगढ़ (छत्तीसगढ़)

ये कैसी प्रैक्टिस!!

चित्रकथा: देवाशु वत्स

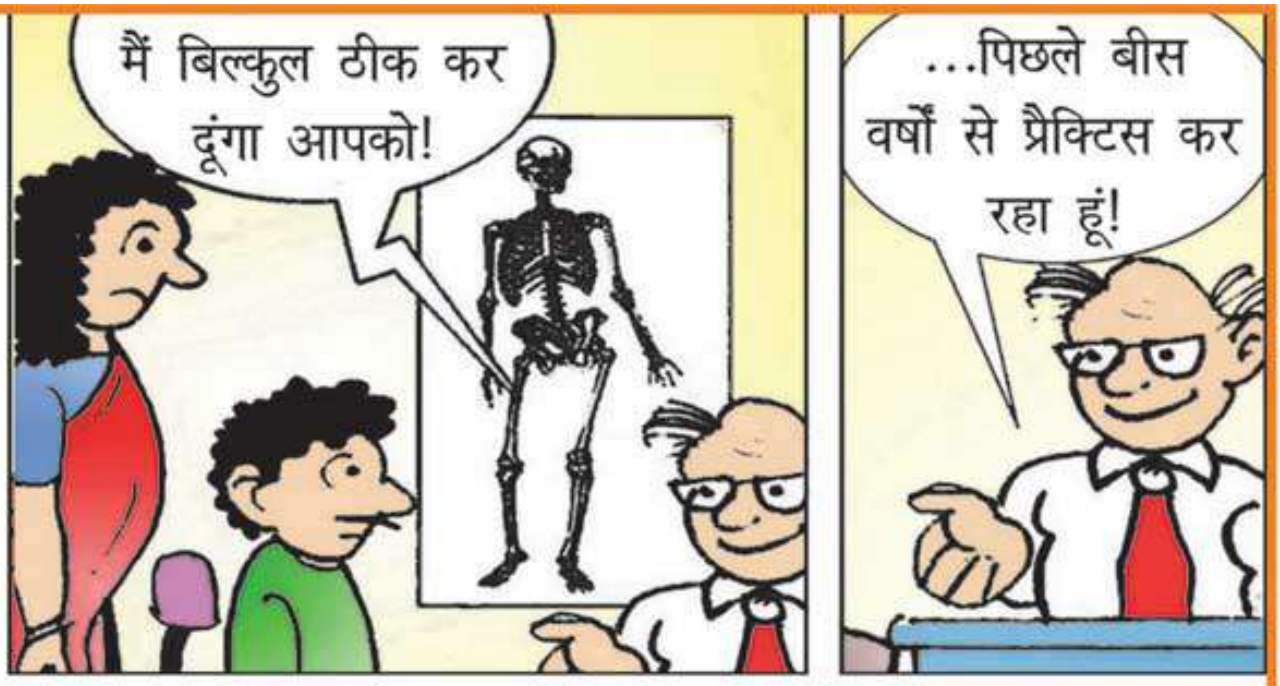

लालों का नुकसान!!

नहीं साहब, यही आज-कल करते करते...
...इस कालोनी में मेरे लाखों रुपये डूब गए!
समाप्त
सलाह का असर!
मैंने आपको खिड़की खोल कर सोने की सलाह दी थी। क्या आपने ऐसा किया था?
हां डॉक्टर।
इससे आपका सिरदर्द गायब हुआ?
हां, और....
साथ में टीवी, फ्रिज, कूलर, पंखे आदि भी गायब हो गए!!
समाप्त

देवपुत्र द्वारा आयोजित प्रतियोगिता एवं पुरस्कारों के लिए प्रविष्टियाँ आमंत्रित

कोरोनाकालीन अवरोध के बाद **'देवपुत्र'** आपके लिए विभिन्न प्रतियोगिता एवं पुरस्कार पुन: आरंभ कर रहा है।

* एक प्रतियोगिता/पुरस्कार के लिए एक ही प्रविष्टि भेजें।

* प्रविष्टि के ऊपर प्रतियोगिता/पुरस्कार का नाम एवं अंत में अपना नाम, पूर्ण पता, मोबाईल नं. एवं रचना का स्वरचित होने का प्रमाण-पत्र अवश्य दीजिए।

* रचनाएँ हिन्दी में हों। हस्तलिखित रचनाएँ डाक से ही 'देवपुत्र' ४०, संवाद नगर, इन्दौर-४५२००१ (म.प्र.) पर भेजें। टाईप की हुई रचनाएँ इस मेल editordevputra@gmail.com पर भी भेज सकते हैं। हस्तलिखित रचना का फोटो खींचकर मेल न करें।

* प्रविष्टि भेजने की अंतिम तिथि ३१ जनवरी २०२३ है।

* निर्णायकों का निर्णय सर्वमान्य होगा।

* सभी रचनाओं का प्रकाशन अधिकार 'देवपुत्र' का होगा।

श्री भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता २०२२

यह प्रतियोगिता **'देवपुत्र'** के पूर्व व्यवस्थापक स्व. श्री शांताराम शंकर भवालकर जी की स्मृति में आयोजित है। प्रतियोगिता केवल बच्चों के लिए है। बच्चे किसी भी विषय पर अपनी स्वयं की बनाई बाल कहानी भेज सकते हैं।

पुरस्कार निम्न प्रकार से हैं-

प्रथम	द्वितीय	तृतीय	प्रोत्साहन पुरस्कार (२)
१५००/-	११००/-	१०००/-	५००/-५००/-

मायाश्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार २०२२

डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ 'देवपुत्र' के माध्यम से आयोजित इस वर्ष यह पुरस्कार जनवरी २०२० से दिसम्बर २०२० के मध्य प्रकाशित **'हिन्दी बाल कहानी की पुस्तक'** के लिए निश्चित किया गया है। पुरस्कृत कृति को प्रमाण-पत्र सहित ५०००/- पुरस्कार निधि प्रदान की जाएगी। प्रविष्टि हेतु प्रकाशित पुस्तक की ३ प्रतियाँ भेजना आवश्यक है।

डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार २०२२

डॉ. परशुराम शुक्ल द्वारा 'देवपुत्र' के माध्यम से आयोजित यह पुरस्कार इस वर्ष **'महिला क्रांतिकारी के प्रसंग'** के लिए निश्चित किया गया है। पुरस्कार होंगे-

प्रथम	द्वितीय	तृतीय	प्रोत्साहन पुरस्कार (२)
१५००/-	१२००/-	१०००/-	५००/-५००/-

केशर पूरन स्मृति पुरस्कार २०२२

वरिष्ठ साहित्यसेवी श्री रमेश जी गुप्ता द्वारा उनके पूज्य माता-पिता की स्मृति में स्थापित 'केशर पूरन स्मृति पुरस्कार २०२२' देवपुत्र के पुस्तक परिचय स्तंभ में प्रकाशित बाल साहित्य की किसी एक श्रेष्ठ कृति पर प्रदान किया जाता है। जनवरी २०२२ से दिसम्बर २०२२ तक प्रकाशित पुस्तक का चयन कर निर्णायक द्वारा घोषित किया जाएगा।

कविता

तितली रानी

– विज्ञान व्रत

तितली रानी कहाँ चली
जरा पास तो आओ तुम
तुमको जल्दी होती है फूलों के घर जाने की
फुरसत होती कहाँ तुम्हें हमसे कुछ बतियाने की
तुममें कोई जादू है सबको मोहित करने का
कला हमें भी सिखलाओ दुनिया को भरमाने की
लगती हो तुम बहुत भली
हमको मित्र बनाओ तुम
इधर-उधर मँडराते ही तुम्हें देखते हम अक्सर
घर-बार तुम्हारा है कोई या हो केवल यायावर
अपना सपनों वाला घर कभी हमें भी दिखला दो
उस घर में बहता होगा रूप-गंध का रस-निर्झर
मेरे मन के गाँव-गली
थोड़ा तो महकाओ तुम
तुम तो किसी चितेरे की मधुर कल्पना लगती हो
किसी स्वर्ग के मंदिर की श्रेष्ठ अल्पना लगती हो
नहीं धरा की वस्तु कभी इतनी मोहक हो सकती
किसी परी ने देखा जो ऐसा सपना लगती हो
कैसे तन-मन से उजली
हमको भेद बताओ तुम
किसने यह शृंगार किया क्यों न हमें बतलाती हो
दुल्हन जैसा रूप मिला इसीलिए इतराती हो
तन चंचल, मन चंचल है, तुम ठहरी जादूगरनी
जाने कहाँ-कहाँ अपना इन्द्रजाल फैलाती हो
लेकर पंखों में बिजली
क्षण भर में उड़ जाओ तुम
तितली रानी कहाँ चली
जरा पास तो आओ तुम

– नोएडा (उ. प्र.)

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२१-२०२३ | आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/१०/२०२२ | प्रेषण तिथि ३०/१०/२०२२ | प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

जुलाई २०२२ के अंक से देवपुत्र का संशोधित मूल्य निम्नानुसार है।

एक अंक ३०/- वार्षिक सदस्यता २००/- १५ वर्षीय सदस्यता २०००/-

एक ही पते पर १० या अधिक अंक एक साथ मँगवाने पर वार्षिक शुल्क १५०/- प्रति अंक

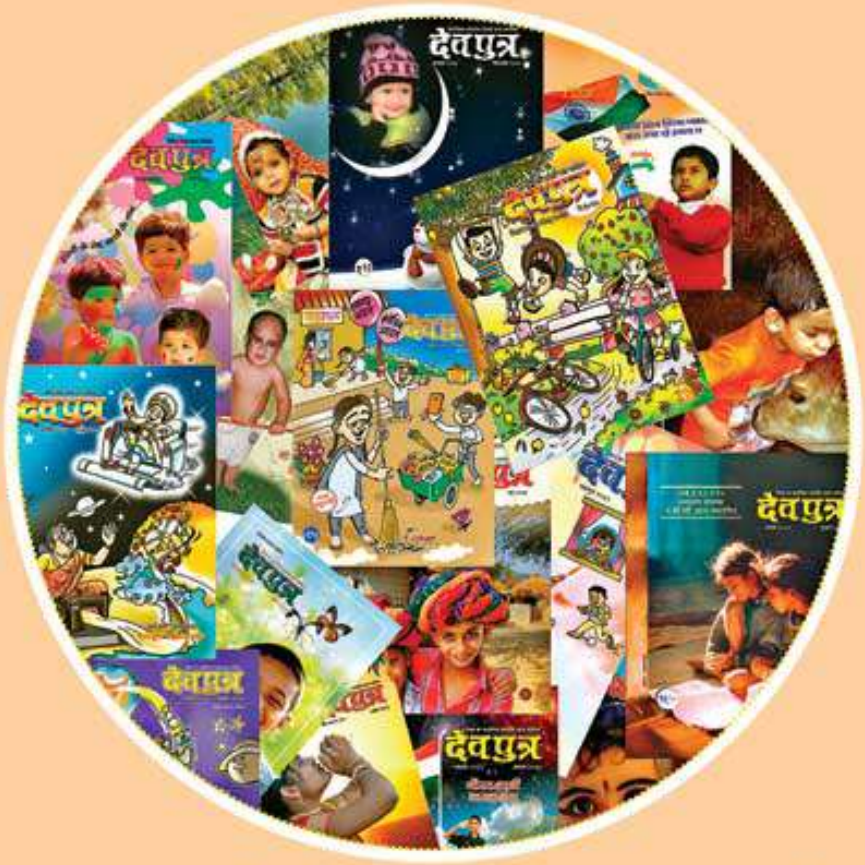

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल

'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

अब और आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा टी.एन. ट्रेडर्स, सांवेर रोड, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना